MAA OMWATI DEGREE COLLEGE, HASSANPUR (PALWAL)

NOTES

SUBJECT : History of India Earliest 1200 A.D.

CLASS : B.A 1st Sem

SESSION : 2021-2022

B.A-Ist Sem. Subject- History

UNIT-I

Q. इतिहास को परिभाषित करें? इतिहास और अतीत के सम्बन्धों का वर्णन करें

Q प्राचीन भारत के इतिहास को जानने के प्रमुख स्रोतों का वर्णन?

Q. नव पाषाण से अभिप्राय और इसकी विशेषताओं का वर्णन करें

Q सिन्धु घाटी सभ्यता की नगर निर्माण योजना की विशेषताएं?

Q. हड़प्पा संस्कृति या सभ्यता के पतन के कारणों का वर्णन?

UNIT-II

Q. वीर काल से क्या अभिप्राय है इसकी विशेषताएं

Q. महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी का जीवन एवं शिक्षाएं?

UNIT-III

Q. चन्द्र गुप्त मौर्य या मौर्यों के शासन प्रबन्ध की व्याख्या करें।

Q. अशोक के धम्म से क्या अभिप्राय है विशेषताएं एवं प्रभाव

Q. महमूद गजनवी के आक्रमणों का वर्णन व प्रभावों का संक्षेप में वर्णन करें।

Unit IV

Q गुप्तकाल को स्वर्णकाल क्यों कहा जाता है? इसका विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिए।

Q सिकंदर के भारत पर किए गए आक्रमणों का वर्णन कीजिए।

History.
BA - Ist Sem.
Syllabus

UNIT - I

Define History, Sources of Ancient India : Type & use
Pre-Historical Age, Harappan civilization

UNIT - II

The Vedic Age (1500 BC - 600 BC)
Secound urbanization & the rise of territorial States
New Religious Movements : Jainism & Buddhism.

UNIT - III

Foreign Invasion, Mauryan Empire
Post-Mauryan Age, Sangam Age
Gupta Empire, Pushpabhuties
Tripastite Struggle :- Gujara-Pratiharas, Palas and Rashtrakutas
Early Rajputs, Historical Back ground of the Eastablishment of
Delhi Sultanate

APCO
Date: 01
Page:

Ques:-) इतिहास एवं अतीत में क्या संबंध है? अतीत का अध्ययन किस प्रकार भारत के लिए उपयोगी है?
(अथवा)
इतिहास को परिभाषित करें। इतिहास व अतीत के संबंधों को संक्षेप में स्पष्ट करें।

Ans:-) भूमिका ☆ इतिहासकार का प्रमुख कर्त्तव्य अतीत की घटनाओं को प्रकाश में लाना। घटनाओं के परस्पर संबंध को दिखाना तथा उनकी व्याख्या करना है। इस प्रकार इतिहास अतीत के मानव समाजों के विकास का व्याख्यात्मक वर्णन है। अतीत का पुनर्निर्माण इतिहासकार केवल अपने विचारों एवं कोटियों के परिप्रेक्ष्य में नहीं करता बल्कि उसे यह भी जानना होता है कि जिन लोगों ने इन घटनाओं में भाग लिया उनका इनके विषय में क्या विचार व अनुभूतियाँ थी। इन्हें जानने के लिए उनके पक्षों से महत्वपूर्ण है। इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है —

I प्राचीन संस्कृतियों की जानकारी ☆ प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन से हमें यह जानकारी मिलती है कि भारत में प्राचीन संस्कृतियों की उत्पत्ति और विकास किस प्रकार हुआ? मानव को किन समस्याओं से जूझना पड़ा और उन पर उसने कैसे विजय प्राप्त की? उसने खाना-बदोशी जीवन को छोड़कर स्थाई जीवन कैसे आरंभ किया।

उसने खाना-बदोशी जीवन को छोड़कर स्थायी जीवन कैसे आरंभ किया? उसने कृषि का आरंभ कैसे किया? उसने किस प्रकार गांवों, नगरों और विशाल राज्यों की स्थापना की।

II मानव प्रजातियों का संगम ☆

प्राचीन भारत का इतिहास एक अन्य दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। उस समय यह अनेक मानव प्रजातियों का संगम स्त्रोत रहा है। यहां प्राक् आर्य, भारतीय आर्य, यूनानी, ईरानी, कुषाण, शक, हूण, अरब व तुर्क आदि आकर बस गए। उन्होंने यहां आकर यहां की स्त्रियों से विवाह करवा लिए।

III विभिन्न भाषाओं और लिपियों के साथ संबंध ☆

आधुनिक भारत में जो विभिन्न भाषाएं एवं लिपियां प्रचलित हैं। उनका संबंध प्रत्यक्ष रूप से प्राचीन काल में प्रचलित है। संस्कृत जो प्राचीन काल में आर्यों की भाषा थी, हिंदी, गुजराती, मराठी, बंगला आदि उत्तरी भारत की अनेक भाषाएं उत्पन्न हुई है। दक्षिण भारत में प्रचलित भाषाएं तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम पर संस्कृत भाषा का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। मौर्य काल में प्राकृत भाषा तथा गुप्त काल में संस्कृत भाषा पूरे भारत को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया।

APCO
Date: 02
Page:

IV विभिन्न धर्मों की जन्म-भूमि ★ प्राचीन काल में भारत विभिन्न धर्मों की जन्म-भूमि रहा है। हिंदू धर्म, जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म यहां के प्रमुख धर्म थे। इन सभी धर्मों के लोग सदैव एक साथ मिल कर रहे हैं। भारत के विभिन्न शासकों ने सदा धार्मिक सहनशीलता की नीति का अनुसरण किया। उन्होंने कभी भी अपने धर्म को प्रजा पर थोपने का प्रयास नहीं किया। यदि आज भारतीय प्राचीन काल भारत में प्रचलित धार्मिक सहनशीलता की नीति का अनुकरण कर लें तो निस्सन्देह भारत की प्रगति के मार्ग में आने वाली एक बड़ी बाधा दूर हो जाए।

V लोकतन्त्रीय संस्थाएं प्राचीन काल में भारत में लोकतन्त्रीय संस्थाओं का प्रचलन था। उत्तरवैदिक काल में 'सभा' तथा 'समिति' नामक दो संस्थाएं प्रचलित थीं। इन्हें बहुत सी शक्तियां प्राप्त थीं। वे राजा को शासन प्रबंध चलाने में सलाह देती थी। राजा उनकी इच्छानुसार ही शासन चलाता था। केंद्रीय सरकार उनके मामलों में हस्तक्षेप नहीं करती थीं। दक्षिणी भारत में भी 'उर' और 'महासभा' नामक दो संस्थाओं को स्थानीय स्वशासन में विशेष महत्व प्राप्त था। गाँव में पंचायतें झगड़ों का फैसला करती थीं। लोग पंचों को परमेश्वर समझ कर प्रायः उनका फैसला मान लेते थे। भारतीय लोकतन्त्रीय संस्थाओं को बहुत महत्व देते थे।

APCO
Date :
Page :

VI कला और वास्तुकला

प्राचीनकालीन भारत ने कला और वास्तुकला के क्षेत्रों में आश्चर्यजनक उन्नति की थी। हड़प्पावासी योजनापूर्ण नगर बनाने में कुशल थे। इस काल में बनी कांसे की नर्तकी की मूर्ति तथा विभिन्न प्रकार की मुहरें उनकी श्रेष्ठ कला का प्रमाण है। चीनी यात्री फाह्यान पाटलिपुत्र में बने अशोक के महल को देखकर चकित रह गया था। अशोक द्वारा बनवाए गए विशाल स्तम्भ, उन पर की गई पॉलिश और शीर्ष पर बनाई गई पशुओं की मूर्तियां मौर्य काल की कला का उत्तम उदाहरण हैं।

VII साहित्य का विकास

प्राचीन काल में भारत ने साहित्य के क्षेत्र में बहुत विकास किया। इस काल में सबसे अधिक संस्कृत साहित्य लिखा गया।

इस साहित्य के विकास में आर्यों ने सबसे बहुमूल्य योगदान दिया। उन्होंने न केवल चार वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद) की रचना की अपितु ब्राह्मणों, उपनिषदों, वेदांगों, उपवेदों, पुराणों तथा महाकाव्यों आदि को भी लिखा। मौर्य काल में कौटिल्य द्वारा लिखा गया अर्थशास्त्र एक बहुमूल्य रचना है। गुप्त काल को संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है।

VIII **विज्ञान का विकास** प्राचीन काल मे भारत ने विज्ञान क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की। खगोल विज्ञान के क्षेत्र में आर्यभट्ट, वराहमिहिर तथा ब्रह्मगुप्त के योगदान को कौन भुला सकता है, आर्यभट्ट ने यह सिद्ध किया कि पृथ्वी अपने अक्ष के चारों ओर घूमती है। तथा वह बताया की ग्रहण कैसे लगता है। ब्रह्मगुप्त ने न्यूटन से शताब्दियों पहले यह ज्ञात किया कि "सभी वस्तुएं प्रकृति के नियमानुर पृथ्वी पर गिरती है क्योंकि पृथ्वी की यह विशेषता है कि यह वस्तुओं को अपनी ओर खींचती है" इसे आकर्षण शक्ति का सिद्धान्त कहते हैं। गुप्त काल में गणित के क्षेत्र में असाधारण विकास हुआ। इस काल में न केवल मानव बल्कि पशुओं के इलाज से भी संबंधित अनेक ग्रंथों की रचना की गई।

IX **विविधता में एकता** प्राचीन काल में भारत एक बहुत विशाल देश था। अतः यहां भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा कला एवं संस्कृति में विविधता पाई जाती थी। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में असम से लेकर पश्चिम में सिंधु तक विशाल। उत्तरी भारत में पढ़े जाने वाले रामायण तथा महाभारत को दक्षिण के लोग भी उसी श्रद्धा भाव से पढ़ते थे। एकता स्थापित करने के प्रयास किए जाते रहे हैं।

उपमहाद्वीप को एक देश कहा गया और उसे भारत नामक एक प्राचीन राजवंश के आधार पर भारतवर्ष का नाम दिया गया। इस प्रकार यहां के निवासियों को भरत संतति कहा जाता था। समस्त देश पर शासन करने वाले शासकों को चक्रवर्तिन् कहा जाता था। उत्तरी भारत में पढ़े जाने वाले रामायण तथा महाभारत को दक्षिण के लोग भी उसे श्रद्धा भाव से पढ़ते थे। इस प्रकार देश में भाषात्मक एवं सांस्कृतिक एकता स्थापित करने के प्रयास किए जाते रहे हैं।

वर्ण-व्यवस्था

प्राचीन काल भारत की एक महत्वपूर्ण विशेषता उत्तरी भारत के समाज में वर्ण-व्यवस्था (जाति प्रथा) का उदय था। वैदिक काल में भारतीय समाज चार वर्णों - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र में विभाजित था। आरंभ में यह वर्ण व्यवसाय के आधार पर बंटे थे। पर बाद में जन्म को इसका आधार माना जाने लगा। धीरे-2 यह प्रथा सारे देश में फैल गई। प्राचीन काल में अनेक विदेशी जातियां भारत में आकर बस गईं। वे गुणों के आधार पर किसी न किसी वर्ण में सम्मिलित हो गईं। बाद में अनेक हिंदू इस्लाम अथवा ईसाई धर्म में शामिल हो गए थे।

APCO
Date : 04
Page :

XI एशियाई देशों से सांस्कृतिक सम्पर्क

प्राचीन काल भारतीय इतिहास की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह रही है कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का विदेशों तथा विशेषकर एशियाई देशों में बहुत प्रसार हुआ। इस दिशा में अशोक, कनिष्क एवं हर्षवर्धन नामक शासकों ने प्रशंसनीय योगदान दिया।

अतः चीन, बर्मा (म्यांमार), श्रीलंका, अफगानिस्तान, जावा, सुमात्रा, बाली, कम्बोडिया (कम्पूचिया), चम्पा, स्याम, बोर्नियो, मलाया द्वीप समूह में भारतीय धर्म बौद्ध धर्म, साहित्य एवं कला का बहुत प्रभाव पड़ा। आज भी इन देशों में अनेक भारतीय रीति-रिवाज प्रचलित हैं। निःसन्देह यह भारत के लिए एक बहुत ही गर्व की बात है।

XII उज्जवल भविष्य के लिए ★

प्राचीनकालीन भारतीय इतिहास का अध्ययन भारत के उज्जवल भविष्य के लिए अति आवश्यक है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारा अतीत गौरवमयी था। हमारे पूर्वजों ने अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त कीं। वे हमारी शक्ति का स्त्रोत हैं, परंतु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि प्राचीनकाल समाज में अनेक त्रुटियां प्रचलित थी।

वे हमारी शक्ति का स्रोत हैं। परंतु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि प्राचीनकालीन भारतीय समाज में अनेक त्रुटियां प्रचलित थीं। शूद्रों एवं चाण्डालों के साथ बहुत अमानुषिक व्यवहार किया जाता था। नारी को पुरुष की दासी समझा जाता था। कन्या वध, बाल विवाह, सती प्रथा, विधवा विवाह पर प्रतिबन्ध तथा दहेज प्रथा आदि ने स्त्रियों का जीवन दूभर बना दिया था। लोगों में बहुत से अन्ध-विश्वास फैले हुए थे। अतः जो लोग भारत के उज्जवल भविष्य का निर्माण चाहते हैं, उन्हें अतीत की इन बुराइयों को दूर करना होगा।

APCO
Date : 05
Page :

Ques:- प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोतों का संक्षिप्त वर्णन करें। (Answer)
प्राचीन भारत के स्त्रोतों की विवेचना कीजिए।

Ans:- भूमिका ★
भारत का प्राचीन इतिहास किसी एक स्त्रोत की देन नहीं हैं। डॉ० रमेशचंद्र मजूमदार लिखते हैं, "भारतीयों ने अपने देश के प्रति एक आश्चर्यजनक उदासीनता दिखाई है।" यहां कोई हेरोडोटस पैदा नहीं हुआ जो यूनान की भांति भारत का इतिहास लिखता। इस देश में अनेक धार्मिक ग्रंथ लिखे गए, परंतु सम्पूर्ण देश से संबंध रखने वाली सार्वजनिक घटनाएं किसी एक ग्रंथ में न समेटी गई। ये अभिलेखों, सिक्कों, प्राचीन भवनों आदि के दामन में लिपट कर रह गई। इन्हीं की छानबीन तथा कल्पना का सहारा लेकर भारतीय तथा पश्चिमी विद्वानों ने प्राचीन भारतीय इतिहास का रूप निखारा है। इन स्त्रोतों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है — यहां कोई हेरोडोटस पैदा नहीं हुआ जो यूनान की भांति भारत का इतिहास लिखता। इस देश में धार्मिक ग्रंथ लिखे गए, परंतु सम्पूर्ण देश से सम्बन्ध रखने वाली सार्वजनिक घटनाएं किसी एक ग्रंथ में न समेटी गए। ये अभिलेखों, सिक्कों, प्राचीन भवनों आदि के दामन में लिपट कर रह गई।

APCO
Date :
Page :

I धार्मिक साहित्य

I **वेद** ☆ वेद संख्या में चार हैं — ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद। इनमें से ऋग्वेद सबसे प्राचीन तथा महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं। वेद इस प्रकार है —

(क) **ऋग्वेद** ✿ ऋग्वेद में 1028 सूक्त एवं 10 मंडल है। इसमें सर्वाधिक 250 मन्त्र इन्द्र देवता की प्रशंसा में दिए गए हैं। इसकी रचना 1500–1000 ई०पू० के मध्य हुई।

(ख) **यजुर्वेद** ☆ यह वेद यज्ञ-विधियों का संग्रह है। इससे आर्यों का विस्तार कुरुक्षेत्र तक हो गया थे पता चलता है।

(ग) **सामवेद** => सामवेद से अभिप्राय है मधुर गीत। इसे भारतीय संगीत कला का स्रोत माना जाता है। इसमें 75 नए मंत्र है।

(घ) **अथर्ववेद** ✿ इससे पता चलता है कि आर्यों में अंधविश्वास बढ़ गया था। अथर्ववेद में दुष्ट आत्माओं से बचने के लिए कई प्रकार के जादू-टोनों का उल्लेख किया गया है। इसमें अनेक बीमारियों से बचने के लिए औषधियों का भी वर्णन किया गया है।

2. (पुराण) ★ पुराण से अभिप्राय है - प्राचीन। ये संख्या में 18 हैं। प्रत्येक पुराण के पांच-2 भाग हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से पुराणों का पांचवा भाग बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस भाग में प्राचीन राजवंशों का वर्णन किया गया है।

I ये मौर्य वंश के इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं।

II ये आंध्र वंश का इतिहास जानने में महत्वपूर्ण सहायता देते हैं।

III इसमें प्राचीन नगरों व उसमें परस्पर दूरी का वर्णन है।

3. स्मृतियां ★ स्मृतियां धार्मिक साहित्य का मुख्य अंग हैं। ये आर्यों के कानूनी ग्रंथ हैं। इसमें 'मनुस्मृति' को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। इसे विश्व की सर्वप्रथम कानूनी पुस्तक माना है। इसकी रचना मनु ने की थी। इसके अतिरिक्त नारद, याज्ञवल्क्य एवं विष्णु स्मृतियां भी प्रसिद्ध हैं। ये ग्रंथ हमें आर्यों के दैनिक जीवन से संबंधित नियमों की जानकारी कराते हैं। इसके अतिरिक्त इनमें आर्यों के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक जीवन पर काफी प्रभाव डाला गया है। स्मृतियां धार्मिक साहित्य का मुख्य अंग है। ये आर्यों के कानूनी ग्रंथ हैं।

APCO
Date :
Page :

II ऐतिहासिक साहित्य ☆

1. **ऐतिहासिक ग्रन्थ तथा नाटक** ☆ प्राचीनकाल में अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थ तथा नाटक लिखे गए। ये इतिहास के अध्यायों को आपस में जोड़ने में बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं। महाकवि कालिदास, भवभूति, बाण भट्ट, अश्वघोष, हरिसेन आदि की रचनाओं ने भारतीय इतिहास के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बाण भट्ट के 'हर्ष चरित' से हमें हर्षवर्धन के शासनकाल की जानकारी मिलती है। विशाखादत्त का 'मुद्राराक्षस' मौर्यकाल की आरंभिक दशा पर प्रकाश डालता है।

2. **राजनीतिक तथा व्याकरण संबंधी रचनाएं** ☆

ऐतिहासिक ग्रंथों तथा नाटकों के अतिरिक्त कुछ राजनीतिक तथा व्याकरण संबंधी रचनाएं भी प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी प्रदान करती है। कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। इसमें मौर्यकालीन भारत की झांकी प्रस्तुत की गई है। एस० सी० रेचौधरी के अनुसार "अर्थशास्त्र से प्राप्त सूचनाएं महाकाव्यों तथा पुराणों से प्राप्त सूचनाओं से अधिक विश्वनीय है। ये रचनाएं अनेक तत्कालीन घटनाओं पर प्रकाश डालती हैं।

APCO
Date : 07
Page :

III (पुरातत्व सामग्री) ☆

ऐतिहासिक महत्व की पुरातत्व सामग्री में प्राचीन स्मारकों, अभिलेखों तथा सिक्कों आदि की गणना की जाती है। ये भारतीय इतिहास पर निम्नलिखित प्रकाश डालते हैं।

I प्राचीन स्मारक => प्राचीन स्मारक हमें पूर्व ऐतिहासिक युग की सभ्यताओं की जानकारी कराते हैं। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो की खुदाई से मिली इमारतों, मूर्तियों, मिट्टी के बर्तनों आदि से सिंधु घाटी की महान सभ्यता के दर्शन हुए हैं। हमें पता चलता है कि आर्यों से पूर्व सिन्धु घाटी की सभ्यता काफी उच्च थी। तक्षशिला और सारनाथ के भग्नावशेषों का महत्व किससे छिपा है। गुप्त काल के मन्दिर, विहार तथा चैत्य उस समय के लोगों के धार्मिक विश्वासों की जानकारी कराते हैं।

2. अभिलेख => ऐतिहासिक दृष्टि से अभिलेखों का विशेष महत्व है। ये साहित्य की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय है। इसका कारण यह है कि चट्टानों अथवा पत्थरों पर खुदे हुए हैं। परिणाम-स्वरूप इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करना असंभव है।

I सबसे प्राचीन अभिलेख राजा अशोक के हैं।
II हाथी गुम्फा अभिलेख तथा प्रयाग स्तंभ अभिलेख में समुद्रगुप्त के यश का बखान किया गया है।

III कुछ विदेशी अभिलेखों से भी भारतीय इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएं प्रकाश में आई हैं। एशिया माईनर के बोगजकोई अभिलेख में इन्द्र, वरुण आदि ऋग्वैदिक देवताओं का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार हमें आर्यों के मूल निवास स्थान का एक और प्रमाण मिल गया है।

3. <u>मुद्राएं अथवा सिक्के</u> => प्राचीन भारत के इतिहास जानने में सिक्के बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। वे कई स्थानों से मिले हैं और उनके राजवंशों से संबंधित हैं। हमें मुख्य रूप से क्षत्रपों, नाग राजाओं, राजपूतों तथा गुप्त राजाओं के सिक्के प्राप्त हुए हैं। ये सोने, चांदी व तांबे के बने हुए हैं। सिक्के इतिहास निर्माण में इस प्रकार सहायक है- (i) ये राजाओं की निजी रुचियों की जानकारी देते हैं।

II सिक्कों पर अंकित तिथी को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि किस राजा ने कब तक शासन किया।

III सिक्कों की लिपि से उस समय की प्रचलित भाषा का पता चलता है।

IV सिक्के तत्कालीन आर्थिक दशा पर प्रकाश डालते हैं।

APCO
Date : 08
Page :

IV (विदेशियों के वृत्तान्त)

विदेशी लेखकों ने भी प्राचीन भारत का इतिहास जानने में बहुत योगदान दिया है। कुछ विदेशी तो स्वयं भारत आए और उन्होंने यहां की आंखों देखी दशा को लिपिबद्ध किया। परंतु कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने भारत यात्रा करने वाले लोगों द्वारा सुनाई गई बातों के आधार पर भारत का वर्णन किया। इनमें निम्नलिखित विदेशी लेखकों ने योगदान दिया

I यूनानी लेखक ⇒ प्राचीन भारत का इतिहास जानने के लिए सबसे महत्वपूर्ण लेख यूनानी लेखकों के हैं। इन लेखकों में हेरोडोटस, मैगस्थनीज, प्लूटार्क एरियन इनके नाम उल्लेखनीय हैं।

(i) **हेरोडोटस** ★ भारत के इतिहास पर प्रकाश डालने वाला प्राचीनतम लेखक हेरोडोटस था। उसने अपनी पुस्तक 'हिस्टोरिका' में भारतीय सीमा प्रान्त राजनीतिक संबंधों का वर्णन किया है।

(ii) **एरियन** इसका विवरण सिकन्दर के आक्रमण पर प्रकाश डालता है। उसने इस आक्रमण का वर्णन सिकंदर के सिपाही से सुनी बातों के आधार पर किया था। यदि उसका विवरण उपलब्ध न होता तो सम्भवतः हम सिकंदर के भारत पर आक्रमण से अनभिज्ञ रह जाते।

APCO
Date :
Page :

(iii) मैगस्थनीज → मैगस्थनीज भी एक यूनानी इतिहासकार था । वह चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में 302 ई० पू० से 298 ई० पू० तक एक यूनानी राजदूत के रूप में रहा । उसने अपनी पुस्तक 'इण्डिका' में तत्कालीन भारत का बहुत सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है।

IV प्लूटार्क और स्ट्रैबो ☆ इन विद्वानों के लेख हमें मौर्य काल की महत्वपूर्ण जानकारी कराते हैं ।

V डीमेकस ⇒ डीमेकस के लेख भी भारतीय इतिहास के निर्माण में काफी सहायक सिद्ध हुए । वह बिन्दुसार के दरबार में यूनानी राजदूत था ।

VI टॉलमी ⇒ टॉलमी का भूगोल प्राचीन भारत के भूगोल व व्यापार को जानने का बहुत बड़ा स्त्रोत है ।

2. चीनी लेखक ⇒ चीनी लेखकों में फाहयान, ह्वेनसांग तथा इत्सिंग के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । ये चौथी शताब्दी से सातवीं शताब्दी के बीच भारत आए । इनके वृत्तांत भारत का इतिहास जानने में बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं ।

Ques:- नव-पाषाण काल से आपका क्या अभिप्राय है ? नव-पाषाण काल में मानव जीवन की विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

(अथवा)

नव-पाषाण काल की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

Ans. भूमिका :- आधुनिक मानव के पूर्वजों ने जिस काल में सभ्य बनना आरंभ किया, उसे नव-पाषाण काल के नाम से जाना जाता है। इस काल में अनेक परिवर्तन हुए । नव-पाषाण काल का आरंभ 9000ई०पू० माना जाता है। परंतु भारत में इसका प्रारंभ 7000 ई० पू० ही हुआ । इस काल में मानव ने कृषि आरंभ की, पशुपालन आरंभ किया, कपड़ा बनाना सीखा, गृह निर्माण किया तथा अग्नि एवं पहिए का आविष्कार किया । भारत में यह काल 2500 ई० पू० तक रहा । भारत में इस काल के प्रमुख केन्द्र पंजाब में जलीलपुर, कश्मीर में बुर्जहोम, मेघालय में गारो, तमिलनाडु में पैयमपल्ली, कर्नाटक में मास्की तथा बिहार में चिरांद आदि है।

भारतीय नव-पाषाणिक लोगों के जीवन की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार से है—

इसका प्रारंभ 7000 ई पू० ही हुआ । इस काल में कृषि आरंभ की, पशुपालन आरंभ किया कपड़ा बनाना सीखा, गृह कार्य किया, पहिए व अग्नि का आविष्कार किया ।

APCO
Date :
Page :

1. कृषि ⇒ नव-पाषाण काल में मानव द्वारा कृषि का आरंभ एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। आरंभ में उसने पत्थर की कुदालों और डंडों से कृषि योग्य भूमि तैयार की। बाद में उसने हलों का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया। इस काल में मनुष्य गेहूं, जौं, मक्की, चावल, कपास तथा रागी आदि की खेती करता था। कृषि की जानकारी हो जाने के कारण मनुष्य को अब भोजन की तलाश में भटकने की जरूरत न रही। परिणामस्वरूप उसने स्थायी तौर पर बसना आरंभ कर दिया।

2. निवास स्थान ⇒ नव-पाषाण काल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इस काल में मनुष्य ने खानाबदोशी जीवन का त्याग कर दिया। अब वह स्थायी रूप से घरों में रहने लगा था। वैसे भी कृषि का व्यवसाय अपनाने के कारण उसके लिए स्थायी रूप से रहना आवश्यक हो गया था। उसने पत्थर, मिट्टी तथा कच्ची ईंटों आदि की झोंपड़ियां बना ली थी। इस प्रकार परिवार तथा कबीलों का जन्म हुआ। धीरे-2 इन्होंने ही गांवों का रूप धारण कर लिया।

APCO
Date : 10
Page :

3. पशु-पालन ⇒ नव-पाषाण काल से पूर्व मानव मांस के लिए पशुओं का शिकार करता था। वह उन्हें उपयोगी प्रति-द्वन्द्वी समझता था। इन पशुओं से दूध, मांस तथा ऊन प्राप्त की जाती थी। धीरे-2 उसे यह अनुभव हुआ कि कुछ पशु उपयोगी हैं, और उनको पाला जा सकता है। अतः उसने कुत्ता, गाय, बैल, घोड़ा, भेड़ तथा बकरी आदि पशुओं को पालना आरंभ कर दिया। कुत्ता पहला जानवर था जिसे मनुष्य ने शिकार में सहायता के लिए पाला। इसके अतिरिक्त इनसे खेती तथा यातायात का कार्य भी किया जाने लगा।

4. अग्नि का आविष्कार

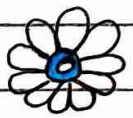

अग्नि का आविष्कार नव-पाषाण काल के मानव की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। उसने दो पत्थरों को रगड़कर अग्नि जलाने का तरीका सीखा। अग्नि की सहायता से अब उसने भोजन को पकाकर खाना आरंभ कर दिया। अग्नि का उपभोग उसने प्रकाश, ठण्ड से बचने, जंगली पशुओं को डराने, मिट्टी के बर्तन पकाने तथा बढ़िया औजार बनाने के लिए भी किया। अग्नि का

आविष्कार मानव के जीवन का एक परिवर्तनीय बिंदु सिद्ध हुआ। मानव जीवन के विकास की गति तीव्र हो गई।

5. <u>पहिए का आविष्कार</u> ⇒ नव-पाषाण काल में पहिए के आविष्कार के कारण मानव जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। पहिए का प्रयोग सबसे पहले बर्तन बनाने के लिए चाक के रूप में किया गया। इससे पहले कुम्हार मिट्टी के बर्तन हाथ से बनाता था। ये बर्तन इतने सुंदर नहीं होते थे। परंतु अब चाक की सहायता से पहले की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छे बर्तन बनाए जाने लगे। पहिए का उपयोग जुलाहे के चरखे के रूप में भी किया जाने लगा। इस कारण अब कपास को कातना बहुत सरल हो गया। इसके अतिरिक्त अब बड़ी मात्रा में वस्त्र तैयार करना भी संभव हो गया। पहिए का उपयोग धीरे-२ गाड़ी खींचने के लिए भी किया जाने लगा। इस कारण समान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना सुगम तथा आवागमन सुखद हो गया। पहिए का धीरे-२ गाड़ी खींचने के लिए भी किया जाने लगा।

6. **औजार** → नव-पाषाण काल के औजार मध्य-पाषाण काल के औजारों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है।

अब औजारों के लिए बढ़िया किस्म के पत्थरों का प्रयोग किया जाने लगा था। ये सभी औजार पॉलिशदार होते थे व चमकीले होते थे। इस काल में बनी पत्थर की कुल्हाड़ियां तथा फलक भारत के अनेक भागों से प्राप्त हुए है। जबकि अब कई स्थानों से पत्थर के हथौड़े, तेजधार चाकू तथा अन्य किस्म के औजार प्राप्त हुए है। खुदाई के समय बहुत से औजार मिले जिनकी जानकारी इतिहासकारों ने निकाली। और इस समय में मनुष्य ने लकड़ी एवं हड्डियों के भी अनेक औजार बनाए, जिनका प्रयोग किया जाता था। हड्डियों से निर्मित औजार हमें बुर्जहोम तथा चिरांद नामक स्थानों से प्राप्त हुए हैं। पुरा-पाषाण काल में मानव का जीवन पशुओं की ही भांति था। क्योंकि उसे भोजन के लिए मांस की आवश्यकता थी और उसे अपना अन्य जानवरों से बचाव करना होता था। अतः उसने कुछ औजार बना लिए। ये औजार 'क्वार्टजाइट' नामक पत्थर के होते थे जो कि सख्त थे। अब औजारों के लिए अच्छे किस्म के पत्थरों का प्रयोग किया जाने लगे था। ये औजार पालिशदार होते थे।

7. भोजन ⇒ नव-पाषाण काल में मनुष्य गेंहू, जौ, चावल, मक्की आदि कई प्रकार के अनाजों का प्रयोग करने लगा था। पशु पालन के लिए वह दूध का प्रयोग भी करने लगा था। साथ ही उसने मांस एवं फलों को खाना जारी रखा। आग की जानकारी हो जाने के कारण अब मानव अपने भोजन को पका कर खाने लगा था।

8. पहरावा ⇒ नव-पाषाण काल में मनुष्य ने अपने शरीर को ढकने के लिए वस्त्रों का प्रयोग करना आरंभ कर दिया था। पुरा पाषाण काल में मनुष्य वस्त्र नहीं पहनता था, परंतु नव-पाषाण काल में वस्त्रों की खोज हुई और मनुष्य ने वस्त्रों का प्रयोग करना आरंभ कर दिया। और ये वस्त्र सूती एवं ऊनी होते थे। जो कि स्त्री व पुरुष दोनों का पहनावा था। इस काल में पुरुषों एवं स्त्रियों ने पहले की तरह पत्थरों एवं हड्डियों के आभूषणों को पहनना जारी रखा। इससे ये पता चलता है कि स्त्री व पुरुष दोनों को आभूषण पहनने का बहुत शौक था।

APCO
Date: 12
Page:

9 मिट्टी के बर्तन # आरंभ में मानव मिट्टी के बर्तन हाथ से बनाता था। क्योंकि तब उन्हें इनके बारे में कोई जानकारी नहीं थी। नव-पाषाण काल में वह उन बर्तनों को आग में पकाने लगा। साथ ही इस काल में चाक की सहायता से अत्यंत सुंदर बर्तन बनने लगे। वह इन बर्तनों पर पशु-पक्षियों तथा मानवों के चित्र भी चित्रित किए और उन पर सुंदर चित्रकारी करने लगे, जिससे वो और भी सुंदर दिखने लगे। नव-पाषाण के बर्तन पॉलिशदार हैं। और काले मृदभांड, धूसर मृदभांड तथा मन्दवर्ण मृदभांड आते हैं वे अपने चाक पर बर्तन बनाकर उन्हें एक सुंदर आकार देते थे और उन पर उत्तम कला चित्रकला करते थे। जो कि बहुत सुंदर दिखते थे।

10. (कला) # नव पाषाण काल में कला का विकास आरंभ हो गया था। इस काल में मानव ने पशु-पक्षियों के अतिरिक्त मनुष्य के चित्र भी बनाने आरंभ कर दिये थे। ये चित्र पुरा-पाषाण कला की तुलना में सुंदर थे। इस काल में मानव ने पक्की मिट्टी की मूर्तियां बनानी भी आरंभ कर दी।

इस काल में मानव ने पक्की मिट्टी की मूर्तियां बनानी भी आरंभ कर दी थी। इसके अतिरिक्त उसने अपने मनोरंजन के लिए बांसुरी तथा ढोलक आदि बना लिए थे। इस प्रकार इस काल में मनुष्य ने इस काल में संगीत कला का श्रीगणेश हुआ।

11 धार्मिक विश्वास => नव-पाषाण काल में मनुष्य का धार्मिक विश्वास एक दृढ़ स्वरूप ले चुका था। वह सूर्य, चंद्रमा, तारे, वृक्षों तथा पर्वतों की उपासना करने लगा था। इस काल में शवों को विधि के अनुसार दफनाया जाता तथा उन पर स्मारक बना दिए जाते थे। इससे स्पष्ट होता है कि वे लोग अपने पूर्वजों की पूजा करते थे। बुर्जहोम के लोग कब्रों में अपने मालिकों के शवों के साथ पालतू कुत्ते भी दफना देते थे। इसके अतिरिक्त उस समय के लोग जादू-टोनों में काफी विश्वास रखते थे। अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए मानव तथा पशुओं की बलि की प्रथा का आरंभ इसी काल में हुआ था इस प्रकार हम कह सकते है कि नव-पाषाण काल में लोगों में धार्मिक विश्वास बढ़ गया था। वे इनमें विश्वास करने लगे थे।

APCO
Date: 13
Page:

Ques:- सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करो। (उत्तराखंड)
हड़प्पा सभ्यता में नगर योजना पर प्रकाश डालिए।

Ans:- भूमिका ⇒ सिंधु घाटी की जिस विशेषता ने पुरातत्व विभाग के अधिकारियों को सर्वाधिक चकित किया, वह इसकी नगर योजना थी। सिंधु घाटी सभ्यता की खोज से पूर्व हमारे देश का इतिहास आर्यों के आगमन से आरंभ होता था। आर्य एक ग्रामीण सभ्यता थी, परंतु सिंधु घाटी सभ्यता में नागरिक सभ्यता के दर्शन हुए। खुदाई में जो नगर मिले हैं वे एक योजना के अनुसार बने दिखाई देते हैं।
नगरों में सड़कों, गलियों, मकानों तथा बाजारों की भी व्यवस्था की गई थी। नगरों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इनको स्वास्थ्य तथा सफाई के नियमों को ध्यान में रखकर बनाया गया था। यह नगर-योजना इस बात का प्रतीक है कि उस समय भारत में सभ्यता का उदय हो चुका था। इस नगर-योजना का वर्णन इस प्रकार है।

I व्यवस्थित सड़के तथा गलियां सिंधु घाटी की सड़के तथा गलियां एक निश्चित योजना के अनुसार बनाई गई थीं। सड़के, संपूर्ण नगर में छोटी-बड़ी सड़कों का जाल बिछा हुआ था। ये

APCO
Date :
Page :

सड़के 13 फुट से 34 फुट तक चौड़ी होती थी, सड़के सीधी थी और एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। गलियां भी बिल्कुल सीधी थी और वे अन्य गलियों तथा सड़कों को समकोण पर काटती थीं। परिणामस्वरूप संपूर्ण नगर अनेक वर्गाकार खंडों में विभाजित नजर आता था। आधुनिक सभी आदर्श बस्तियां इसी नमूने की बनाई जाती है। जब भी वायु चलती वह सड़कों का कूड़ा-कर्कट उड़ा ले जाती थी। यद्यपि सड़के कच्ची मिट्टी की बनी हुई थी। परंतु वे मजबूत होती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि सड़कों तथा गलियों में रात के समय रौशनी का भी प्रबंध था।

2. <u>व्यवस्थित मकान</u> — सिंधु घाटी के मकान एक निश्चित योजना के अनुसार बनाए जाते थे। प्रत्येक मकान में एक स्नानागार, सीढ़ियां और आंगन के चारों ओर कमरे हुआ करते थे। छोटे मकानों का क्षेत्र 30×27 फुट का था। मकानों की दीवारें काफी मोटी होती थी। मकानों का कोई भी हिस्सा सड़क तथा गली की ओर निकला हुआ नहीं होता था। प्रत्येक मकान के बीच एक फुट का फासला होता था।

APCO
Date : 14
Page :

विद्वानों का अनुमान है कि शायद लोगों को नक्शे पास करवा कर ही मकान बनवानें पड़ते होगें। इस सारी व्यवस्थित प्रणाली का उद्देश्य नगर की सुन्दरता को बनाए रखना था। मकानों की बाढ़ से सुरक्षा के लिए उन्हें प्राय: ऊंचे चबूतरों पर बनाया जाता था। तथा इनकी नींव भी गहरी रखी जाती थी।

3. भवन निर्माण कला :- सिंधु घाटी के लोग पक्की ईंटों के मकान बनाते थे और उनकी चुनाई गारे से करवाते थे। वे गारे की चुनाई इसलिए करवाते थे ताकि ईंटों को आवश्यकतानुसार अलग करके दूसरे स्थान पर प्रयोग किया जा सके। इन ईंटों का आकार $2\frac{1}{4}" \times 10\frac{1}{2}" \times 3\frac{1}{4}"$ होता था। मकानों की खिड़कियां तथा दरवाजे सड़क की ओर नहीं खुलते थे। उन्होंने खिड़कियों तथा दरवाजों की व्यवस्था इस ढंग से की थी कि वायु आसानी से अंदर आ सके। इनकी चौड़ाई 3 से 4 फुट तथा ऊंचाई 6 फुट तक होती थी। कुछ ऐसे दरवाजे भी मिले हैं जो 18 फुट चौड़े हैं। निश्चित ही ऐसे मकानों में गाड़ियां घुसने की व्यवस्था थी। कुछ दरवाजों में चरखनी की व्यवस्था भी थी। इस काल में भवन निर्माण कला अति सुंदर थी।

4. मकानों की छतें 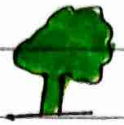 मकानों की छतें लकड़ी की कड़ियों से बनाई जाती थी। इन कड़ियों पर एक चटाई-सी बिछा दी जाती थी, जो घास या पतली टहनियों की बनी होती थी। इस पर लिपाई कर दी जाती थी। वर्षा के पानी के निकास के लिए छत पर नालियों की भी व्यवस्था कर दी जाती थी। इन नालियों में ईंटें लगी होती थी। जो पानी को मकानों से दूर फेंकती थी। मकान के फर्श भी पक्की ईंटों से बने होते थे।

5. नालियों का प्रबन्ध 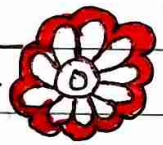 सिंधु घाटी में नालियों की व्यवस्था बड़ी सुन्दर थी। प्रत्येक घर में नालियां थी। घरों की नालियां, सड़कों की नालियों में आ मिलती थी। ये नालियां सड़क के दोनों ओर बनी होती थी। ये नालियां एक फुट गहरी तथा 9 इंच चौड़ी होती थी। ये पक्की ईंटों, गारे तथा एक प्रकार के गारे तथा एक प्रकार के चूने से बनाई जाती थी। इन नालियों के ऊपर ईंटों को ही ढक्कनों के रूप में प्रयोग किया जाता था। इन नालियों का पानी आगे एक बड़ी नाली में जा गिरता था, जो पानी को

बाहर ले जाती थी।

6. सार्वजनिक भवन => सिंधु घाटी की खुदाई से हमें कुछ सार्वजनिक भवन भी प्राप्त हुए हैं। उनका वर्णन इस प्रकार है —

(i) विशाल स्नानागार ★

खुदाई से प्राप्त सार्वजनिक भवनों में मोहनजोदड़ो स्थित विशाल स्नानागार सर्वाधिक प्रसिद्ध है। यह स्नानागार 180 फुट लम्बा तथा 108 फुट चौड़ा है।

इसके बीच 39 फुट लम्बा, 23 फुट चौड़ा तथा 8 फुट गहरा तालाब बना हुआ है। यह तालाब पक्की ईंटों का बना हुआ है। इसमें प्रवेश करने के लिए उत्तरी तथा दक्षिणी छोरों पर ईंटों की सीढ़ियां बनाई गई थी तालाब में पानी भरने के लिए निकट ही एक कुंआ बनाया गया था। तालाब से गंदे पानी के निकास के लिए नालियों का प्रबंध भी किया गया था। तालाब के निकट ही दो मंजिला कमरे थे। इतिहासकारों का मानना है कि लोग त्यौहारों पर अथवा विशेष अवसरों पर यहां स्नान करने के लिए आते थे। डा० आर० के मुखर्जी के अनुसार, "ऐसे स्नानागार के निर्माण से उस समय की इंजीनियरी की प्रगति का ज्ञान होता है"।

APCO
Date:
Page:

(ii) <u>अन्नागार</u> => सिंधु घाटी की खुदाई से हमें विभिन्न स्थानों पर अनेक अन्नागारों का पता चला है। हमें ये अन्नागार हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल तथा कालीबंगा आदि में प्राप्त हुए हैं। मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुए अन्नागार का आकार 150 फुट × 75 फुट फुट है। ये अन्नागार नदियों के किनारों पर स्थित होते थे।

(iii) <u>अन्य भवन</u> ☆ सिंधु घाटी की खुदाई के दौरान ही हमें कई अन्य प्रकार के भवन भी प्राप्त हुए हैं। मोहनजोदड़ो से एक विशाल हॉल प्राप्त हुआ है, जिसमें 20 स्तंभ हैं। इसके अतिरिक्त यहां से एक विशाल भवन भी प्राप्त हुआ है, जो 230 फुट लंबा तथा 115 फुट चौड़ा है। ऐसा माना जाता है कि यह किसी उच्चाधिकारी का निवास स्थान अथवा सभागार था। जहां अधिवेशन हुआ करते थे। इनके अतिरिक्त खुदाई से यात्रियों की सुविधा के लिए बनाए गए। अनेक विश्रामगृहों का भी पता चला है।

APCO
Date: 16
Page:

Ques:-> हड़प्पा सभ्यता के पतन के प्रमुख कारणों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। (अथवा)
हड़प्पन व सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख कारण क्या थे?

Ans:-> **भूमिका** :- 1700 ई॰पू॰ के लगभग हड़प्पा सभ्यता के पतन के लक्षण स्पष्ट दिखाई देने लगे थे। इस समय तक हड़प्पा सभ्यता के दो प्रमुख केंद्र हड़प्पा एवं मोहन-जोदड़ो नष्ट हो चुके थे। यह कहना कठिन है कि हड़प्पा सभ्यता का अन्त कब और कैसे हुआ? इस संबंध में अब भी विद्वानों में मतभेद बना हुआ है। जब तक विद्वान हड़प्पा सभ्यता की लिपि को पूरी तरह पढ़ने में सफल नहीं हो जाते, इस सभ्यता के पतन के बारे में निश्चित रूप से कुछ कहना अत्यंत कठिन है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस विस्तृत सभ्यता का अंत एकदम नहीं हुआ अपितु धीरे-2 हुआ। हड़प्पा सभ्यता का अंत धीरे-2 हुआ। इस सभ्यता अंत किस प्रकार हुआ ये सब इतिहासरों ने जानने की कोशिश की और हड़प्पा सभ्यता की खुदाई भी की जो कि उनमें से अवशेष प्राप्त हुए है। कुछ प्रमुख कारणों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है—
इस काल में खुदाई मे कई प्रकार के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

APCO
Date :
Page :

I आर्यों के आक्रमण ⇒ गॉर्डन चाइल्ड, सर मोर्टीमर व्हीलर तथा स्टुआर्ट पिगट आदि अनेक इतिहासकारों का यह मत है कि आर्यों के आक्रमण के कारण हड़प्पा सभ्यता का विनाश हुआ। ऋग्वेद में इस बात का प्रमाण मिलता है कि आर्य अपने प्रमुख देवता इंद्र से शत्रुओं के दुर्ग नष्ट करने के लिए प्रार्थना करते थे। इन्द्र द्वारा नष्ट किए गए अनेक दुर्गों के नाम भी मिलते हैं। इनमें से प्रमुख था हरियुपिय। विद्वानों ने इसकी पहचान हड़प्पा से की है।

इससे यह संकेत मिलता है कि हड़प्पा सभ्यता का विनाश करने वाले आर्य ही थे। इसके अतिरिक्त हमें मोहन-जोदड़ो से 38 मानव के अस्थिपंजर मिले हैं। इन पर किसी तेज हथियार के निशान हैं। ये किसी बड़े आक्रमण में मारे गए थे।

अनेक आधुनिक विद्वान इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते कि आर्यों के आक्रमण ने हड़प्पा सभ्यता को नष्ट किया। आर० एस० शर्मा के अनुसार आर्य इतनी बड़ी संख्या में नहीं थे कि वे हड़प्पा सभ्यता को जो एक विशाल क्षेत्र में फैली हुई थी जो पूरी तरह नष्ट कर सकते।

केवल 38 मानव अस्थिपंजर के आधार पर किसी बड़े नरसंहार की कल्पना नहीं की जा सकती। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि आर्यों का आक्रमण हड़प्पा सभ्यता के पतन के लिए उत्तरदायी नहीं था।

2. (बाढ़) ☆ एम० आर० साहनी, डॉक्टर डैल्स तथा डा० राइकस के अनुसार हड़प्पा सभ्यता का विनाश का कारण सिंधु तथा इसकी सहायक नदियों में प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ थी। हड़प्पा सभ्यता के केन्द्र नदियों के किनारे बसे हुए थे। बाढ़ के प्रकोप से बचने के लिए हड़प्पा सभ्यता के निवासी अपने भवनों का धरातल बराबर ऊंचा करते चले गए। उनकी यह व्यवस्था लम्बे समय तक कारगर सिद्ध नहीं हो सकी। भू- विज्ञानियों के सर्वेक्षण ने यह सिद्ध किया है कि मोहनजोदड़ो, चन्हुदड़ो, हड़प्पा तथा लोथल नगरों का विनाश बाढ़ के कारण हुआ। बाढ़ के कारण खेती, यातायात, व्यापार इत्यादि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। और लोगों को इनके कारण परेशानी उठानी पड़ी। वे दुःखी हो गए। अतः लोगों को बाध्य होकर अन्य स्थानों पर जाना पड़ा। इसलिए इसका विनाश बाढ़ के कारण भी माना जाता है।

3. भूकम्प => कुछ विद्वानों का यह मानना है कि हड़प्पा सभ्यता का विनाश महा आए विस्तृत पैमाने पर भूकम्प के कारण हुआ। इस कारण अनेक नगरों का नामो निशान मिट गया इस भूकम्प के कारण अनेक नदी मार्ग भी बदल गए। इस कारण भी अनेक बस्तियां उजड़ गई।

4. अग्नि => कुछ विद्वानों के अनुसार हड़प्पा सभ्यता का विनाश भीषण अग्नि कांड के कारण हुआ। क्योंकि उस समय भवनों में लकड़ी का बड़े पैमाने पर प्रयोग होता था। इस कारण अग्निकांड में अनेक नगर नष्ट हो गए। विद्वानों का यह अनुमान बिलोचिस्तान में अनेक स्थलों पर पाए गए राख के अवशेषों पर प्रचलित है। अनेक विद्वान इस मत से सहमत नहीं हैं। उनका कथन है कि हड़प्पा सभ्यता के अन्य केन्द्रों से अग्निकांड के प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। अतः अग्नि से यदि कुछ स्थलों को क्षति अवश्य पहुंची होगी किंतु इसे सम्पूर्ण हड़प्पा सभ्यता के विनाश के लिए उत्तरदायी मानना कठिन है।

APCO
Date : 16
Page :

5. बदलती जलवायु ⇒ डॉक्टर व्हीलर तथा डॉक्टर रौनल्ड इत्यादि का तर्क है कि हड़प्पा सभ्यता का विनाश मुख्य तौर पर बदलती हुई जलवायु के कारण हुआ। उनारंभ में हड़प्पा क्षेत्र में व्यापक स्तर पर वर्षा होती थी। उनत: यहां काफी जंगल पाए जाते थे। वर्षा की कमी के कारण भूमि पर रेगिस्तानी प्रभाव बढ़ने लगा। इससे उनकाल पड़ने लगे जिस कारण हड़प्पा सभ्यता का विनाश हुआ।

6. महामारी ⇒ कुछ विद्वानों के उनुमान के उनुसार हड़प्पा सभ्यता का विनाश किसी महामारी, प्लेग उनथवा मलेरिया के कारण हुआ। इससे इस सभ्यता को गहरा उनाघात लगा।

7. बढ़ती जनसंख्या ⇒ कुछ विद्वानों का विचार है कि हड़प्पा सभ्यता के विनाश के लिए तीव्रता से बढ़ती जनसंख्या काफी सीमा तक उत्तरदायी थी। हड़प्पा सभ्यता के नगरों में जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के कारण प्राकृतिक तथा उार्थिक स्राथनों में कमी उा गयी। इस काल में बढ़ती हुई जनसंख्या ने हड़प्पा सभ्यता का विनाश किया।

APCO
Date :
Page :

8. **प्रशासनिक शिथिलता** => हड़प्पा सभ्यता के पतन का एक मुख्य कारण प्रशासनिक शिथिलता थी। आरंभ में हड़प्पा सभ्यता में भवनों का निर्माण योजनाबद्ध ढंग से किया जाता था। धीरे-2 जनसंख्या के बढ़ने से जहां-तहां भवनों का निर्माण किया जाने लगा। नदियों पर बनाए जाने वाले बांधों की सुरक्षा की ओर कम ध्यान दिया जाने लगा।

9. **व्यापार में गिरावट** ✱ आर० एस० शर्मा का विचार है कि विदेशी व्यापार में गिरावट हड़प्पा सभ्यता के पतन का एक मुख्य कारण था। इस गिरावट के लिए दो कारण उत्तरदायी थे। प्रथम, कृषि तथा उद्योग धंधों में उत्पादन में कमी थी। दूसरा, 1700 ई० पू० के आस-पास उन देशों में राजनीतिक अस्थिरता आई। जिनके साथ हड़प्पा सभ्यता के व्यापारिक संबंध थे। इससे हड़प्पा की अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई। वास्तव में इस सभ्यता के विनाश के लिए प्रकृति तथा मनुष्य दोनों ही उत्तरदायी थे।

Ques:-) ऋग्वैदिक काल के आर्यों के राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन का उल्लेख कीजिए।

Ans:-) **भूमिका** :- ऋग्वैदिक कालीन सभ्यता की गणना संसार की प्राचीन तथा श्रेष्ठ सभ्यताओं में की जाती है। इस सभ्यता का पता हमें आर्यों के महान ग्रन्थ ऋग्वेद से चलता है। इसमें वर्णित अनेक बातों के आधार पर हम आर्यों के राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त करते हैं।

हमें यह जानकर आश्चर्य भी होता है और गर्व भी कि अति प्राचीनकाल में हमारे पूर्वजों ने एक उच्चकोटि की सभ्यता को जन्म दिया और जीवन के हर क्षेत्र में नवीन आदर्श स्थापित किए। संक्षेप में ऋग्वैदिक आर्यों के राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन की मुख्य विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार से है -

I (राजनीतिक जीवन) ☆

I **प्रशासनिक संगठन** ☆ आर्यों ने ऋग्वैदिक काल में एक उन्नत शासन प्रणाली की नींव डाली। शासन की सबसे छोटी इकाई परिवार थी। इसके मुखिया को 'कुलपति' कहा जाता था। कई परिवारों के मेल से एक ग्राम बनता था। ग्राम का

मुखिया 'ग्रामिणी' कहलाता था। अनेक ग्रामों के समूह से विश बनता था। विश विश के प्रधान को 'विशपति' कहा जाता था। कई विशों को मिलाकर जन अथवा कबीला बनता था। ऋग्वेद में भारत, मत्स्य, पुरु, अनु, किवी आदि अनेक कबीलों का उल्लेख आता है। यह काल के पांच मुख्य ति कबीलों को ही 'पंचजन्य' का नाम दिया गया है। प्रत्येक जन एक राजा के अधीन होता था। वह 'राजन' कहलाता है।

2. राजन => राजन 'जन' का मुखिया होता था। उसका पद प्रायः पैतृक होता था। कभी-2 उसका निर्वाचन भी किया जाता था। राजन को राजगद्दी पर बैठने से पूर्व शपथ लेनी पड़ती थी।

3. आय के साधन => राजा की आय के कई साधन होते थे। उसे अपनी जनता से उपहार मिला करते जिन्हें 'बलि' कहा जाता था। वह जिन जातियों पर विजय पाता, उनसे भी भेंट के रूप में धन-राशि स्वीकार करता था। इसके अतिरिक्त युद्ध से प्राप्त पशु तथा धन भी उसकी आय के मुख्य साधन थे।

4. पदाधिकारी ⇒ राजा की सहायता के लिए अनेक पदाधिकारी होते थे। इसमें सेनानी, पुरोहित तथा ग्रामिणी प्रमुख थे।

(i) (सेनानी) ★ सेनानी जन का सेनापति होता था छोटी-2 लड़ाईयां उसी के नेतृत्व में लड़ी जाती थी

(ii) (ग्रामिणी) ★ ग्रामिणी गांव का मुखिया होता था। इसका प्रमुख कर्तव्य गांव में कानून व्यवस्था को बनाए रखना था।

(iii) पुरोहित पुरोहित का पद महत्वपूर्ण माना जाता था। वह राजकार्यों में निपुण होता था। ऋग्वैदिक काल में विश्वामित्र तथा वशिष्ठ जैसे पुरोहितों का शासन में बड़ा हाथ था। पुरोहित युद्ध में राजा के साथ जाता और उसकी विजय के लिए प्रार्थना करता था। अथर्ववेद में ऐसे पांच मन्त्र आते हैं, जिनमें पुरोहित को अपने राष्ट्र के लिए विजय की कामना करते हुए दिखाया गया है। एक मंत्र के शब्द कुछ इस प्रकार हैं: "जिस राष्ट्र का मैं पुरोहित हूँ, उस राष्ट्र का पराक्रम, उत्साह, वीर्य और बल में बढ़ाता हूँ, और शत्रुओं का बल घटाता हूँ।

APCO
Date :
Page :

5. युद्ध प्रणाली ऋग्वैदिक काल में आर्यों की अपनी ही युद्ध प्रणाली थी। सेना छोटी-2 टुकड़ियों में विभाजित होती थी, जिनका नेतृत्व स्वामिणी करता था। राजा तथा अन्य अधिकारी प्रायः रथों पर सवार होकर युद्ध में जाया करते थे। उनके मुख्य अस्त्र-शस्त्र धनुष-बाण, तलवारें, ढालें, बर्छे तथा भाले थे।

6. न्याय => ऋग्वैदिक आर्यों की प्रणाली काफी विकसित थी। यह बदले की भावना पर आधारित नहीं थी।

7. सभा और समिति ★ ऋग्वैदिक काल में सभा नाम एक संस्था होती थी। इसका अध्यक्ष 'सभापति' कहलाता था। इसके सदस्यों को 'सभासद' कहते थे। इसमें न्याय-संबंधी विषयों पर स्वतंत्र रूप से विचार-विमर्श होता था। यहां सभी प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास किए जाते थे। वास्तव में सभा आज की पंचायतों के समान थी। राजा की शक्ति पर अंकुश लगाने के लिए ऋग्वैदिक काल में आर्यों ने समिति नाम की एक संस्था का भी आयोजन किया हुआ था।

APCO
Date: 21
Page:

II सामाजिक जीवन ☆

आर्य लोगों ने एक उच्च तथा आदर्श समाज की स्थापना की। वे बड़े परिश्रमी तथा कर्तव्यपरायण थे। वे शुद्ध, सादा और सदाचारपूर्ण जीवन व्यतीत करने में विश्वास रखते थे। वे अतिथि सत्कार की ओर विशेष ध्यान ध्यान देते थे। जीवन की सादगी और विचारों की श्रेष्ठता उनके सामाजिक जीवन का सारा था।

I **पारिवारिक जीवन** => ऋग्वैदिक काल के सामाजिक जीवन का आधार कुटुम्ब अथवा परिवार था। कुटुम्ब संयुक्त था पितृ-प्रधान होते थे। परिवार में सबसे बड़ी आयु का व्यक्ति परिवार का मुखिया होता था उसे 'गृहपति' कहा जाता था। पिता अपनी सन्तान से दया तथा प्रेम का व्यवहार करता था। परंतु अयोग्य संतान के प्रति उसका व्यवहार अच्छा नहीं होता था।

2. **निवास स्थान** => भारत आने से पूर्व आर्य लोग खानाबदोशों की तरह रहते थे। उन्होंने अपने निवास के लिए किसी प्रकार के घर नहीं बना रखे थे, परंतु भारत आने के उपरान्त उन्होंने अपने पक्के निवास स्थान बना लिए। आर्यों के घर, लकड़ी, मिट्टी तथा घास-फूस के बने होते थे। ये घर स्वच्छ और हवादार होते थे।

3. **भोजन** ⇒ आर्य लोग भोजन में दूध, दही तथा घी का अधिक प्रयोग करते थे। वे अनाज को या तो भूनकर या चपाती बनाकर उपयोग करते थे। आर्य लोग मांसाहारी थे, परंतु अधिकांश भारतीय विद्वान कीथ के इस विचार से सहमत नहीं हैं। आर्यों का प्रिय पेय सोमरस था। वे इसे दूध में मिलाकर पीते थे। यह एक प्रकार की जड़ी-बूटी का रस होता था। जो प्रायः पहाड़ों की चोटियों पर मिलती थी।

4. **वेशभूषा और आभूषण** ⇒ आर्य लोग सूती तथा ऊनी कपड़े पहना करते थे। उनके पहनने वाले वस्त्रों को प्रायः तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है (i) नीवी → ऐसे वस्त्र जो नीचे पहने जाते थे, जैसे लंगोट, कच्छा तथा जांघियां इत्यादि (ii) वासा → शरीर के मध्य भाग पहना जाने वाला कपड़ा जैसे - कमीज, कुर्ता इत्यादि। (iii) अधिवास ⇒ ऐसे कपड़े जो शरीर के ऊपरी भाग में पहने जाते हैं, जैसे पगड़ी, टोपी इत्यादि। उनके वस्त्र रंग-बिरंगे होते थे। दुल्हन के वस्त्रों को 'वाध्यूय' कहा जाता था। इनकी वेशभूषा इसी प्रकार थी।

Date: 22
Page:

5. स्त्रियों की स्थिति ☆ ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी थी, समाज में उनका बड़ा आदर किया जाता था। वे पढ़ी लिखी होती थीं। घोषा, लोमशा, विश्ववरा, मुदगालिनी समाज में उनका बड़ा आदर किया जाता था। स्त्रियाँ उस युग की महान विदुषियां थी। उन्होंने ऋग्वेद के मन्त्रों की रचना की और ऋषि पद प्राप्त किया। इससे स्पष्ट हो जाता है कि ऋग्वैदिक काल में नारी का बड़ा मान था। आर्यों का विश्वास था कि जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। पति की मृत्यु के पश्चात विधवा स्त्री पुनः विवाह कर सकती थी। विधवा स्त्री का विवाह प्रायः अपने देवर से ही कर दिया जाता था।

6. आमोद - प्रमोद => ऋग्वैदिक काल में आर्यों के आमोद - प्रमोद के अनेक साधन थे। रथ - दौड़ और जुआ उनके मनोरंजन का प्रमुख साधन थे। उन्हें संगीत तथा नृत्य का भी बड़ा चाव था। बांसुरी और ढोलक उनके प्रसिद्ध यन्त्र थे। इसके अतिरिक्त शिकार भी उनके मनोरंजन का एक अन्य साधन था। वे शेर, हाथी, सूअर आदि जंगली पशुओं का शिकार किया करते थे। ऋग्वैदिक काल में आमोद - प्रमोद के साधन थे।

7. जाति - प्रथा => ऋग्वैदिक काल में जाति-प्रथा के विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता । कुछ विद्वान कहते हैं कि इस काल में जाति प्रथा आरंभ हो चुकी थी। वे अपने मत की पुष्टि के लिए ऋग्वेद के 'पुरुषसूक्त' का सहारा लेते हैं। इस सूक्त के अनुसार आदि पुरुष के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, पेट से वैश्य तथा चरणों से शूद्र उत्पन्न हुए। परंतु विद्वान इनके मत से सहमत नहीं है। उसका कहना है कि यह मंत्र बहुत बाद का है।

8. शिक्षा => ऋग्वेद के अध्ययन से हमें उस समय की शिक्षा प्रणाली के विषय में ठोस प्रमाण नहीं मिलते । कुछ मन्त्रों से ऐसे प्रमाण अवश्य मिलते हैं जिससे उस समय की शिक्षा प्रणाली की एक धुंधली तस्वीर बनाई जा सकती है। गुरुकुल ही पाठशाला होता था। वहां गुरु अपने शिष्यों को पढ़ाता था। विद्यार्थियों को प्रायः वेद मंत्र पढ़ाए जाते थे। तत्कालीन पढ़ाई मौखिक होती थी। विद्यार्थी सब कुछ जबानी रट लिया करते थे। शुद्ध उच्चारण पर विशेष बल दिया जाता था। इसलिए शिक्षा के बारे में कोई नहीं जान सका ।

Date : 27
Page :

Ques:-) मौर्यकालीन शासन प्रबन्ध पर एक लेख लिखो।

(अथवा)

चंद्रगुप्त मौर्य के नागरिक तथा सैनिक प्रबंध का वर्णन करें।

Ans:-) भूमिका :- मौर्य शासक न केवल महान विजेता थे अपितु उच्चकोटि के शासक प्रबन्धक भी थे। उनके प्रशासन का मुख्य उद्देश्य प्रजा की भलाई था। उनका शासन प्रबन्ध इतना अच्छा था कि यह आने वाली कई शताब्दियों तक थोड़े-बहुत परिवर्तनों से जारी रहा। संक्षेप में मौर्य शासन प्रबंध की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित थीं —

I केन्द्रीय प्रशासन

1. राजा =) राजा केन्द्रीय शासन का मुखिया था उसकी शक्तियां असीम थीं। वह राज्य का सबसे बड़ा सैनिक अधिकारी, प्रमुख न्यायाधीश तथा सर्वोच्च कानून-निर्माता था। राज्य के सभी विषयों में उसका निर्णय अंतिम माना जाता था। वह स्वयं कानून बनाता था। और सभी कानून उसी के नाम पर ही लागू होते थे। कोई भी व्यक्ति उसके कानूनों का उल्लंघन नहीं कर सकता था। राज्य के सभी उच्च अधिकारियों तथा कर्मचारियों की नियुक्ति वह

स्वयं करता था। वह विदेशों में अपने राजदूत भेजता था और अपने दरबार में आने वाले विदेशी राजदूतों से भेंट करता था। वह युद्ध के समय अपनी सेना का नेतृत्व करता था. वह राजदरबार में बैठकर बड़े-2 मुकदमे सुनता था। और उनके विषय में अपना निर्णय सुनाता था। वह पूरे राजकोष का स्वामी था। राज्य की सारी आय-व्यय का ब्यौरा उसके सामने पेश किया जाता था।

2. <u>मन्त्रिपरिषद्</u> ☆ कौटिल्य के अनुसार अकेला राजा एक पहिए वाले रथ के समान है। जिस प्रकार रथ चलाने के लिए दूसरे पहिए की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार राज्य-कार्यों को चलाने के लिए मन्त्रिपरिषद् बहुत आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए चन्द्रगुप्त मौर्य ने एक मन्त्रिपरिषद् की व्यवस्था की जो शासन कार्यों में उसे सलाह देती थी। मन्त्रियों की संख्या 12 से 20 तक थी। प्रत्येक मंत्री को 12,000 पण वार्षिक वेतन मिलता था। राजा के लिए उनके निर्णयों को मानना अनिवार्य नहीं था।

II प्रान्तीय शासन ⇒ शासन कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए साम्राज्य को चार प्रान्तों में विभक्त किया हुआ था – मगध प्रान्त, उत्तर-पश्चिमी प्रान्त, पश्चिमी प्रान्त तथा दक्षिणी प्रान्त । चन्द्रगुप्त के बाद सम्राट अशोक ने कलिंग विजय के पश्चात उसे मौर्य साम्राज्य का पांचवा भाग प्रान्त बनाया । इस प्रकार उसके समय में प्रान्तों की संख्या पांच हो गई । इन प्रांतो का संक्षिप्त वर्णन अग्रलिखित है—

(i) मगध प्रान्त → इस प्रान्त का शासन सीधा राजा के अधीन था । इसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी, जो केन्द्रीय राजधानी भी थी । इसमें आधुनिक उत्तरप्रदेश, बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा के प्रदेश सम्मिलित थे ।

(ii) उत्तरी-पश्चिमी → इस प्रान्त में आधुनिक अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान, पंजाब, सिंध आदि प्रदेश सम्मिलत थे । इसकी राजधानी तक्षशिला थी

(iii) पश्चिमी प्रान्त → इस प्रान्त में आधुनिक गुजरात तथा मालवा के प्रदेश सम्मिलित थे । इस प्रान्त की राजधानी उज्जैन थी । प्रान्त का शासक किसी राजकुमार को बनाया जाता था । उसे कुमार कहते थे । उसकी सहायता के लिए कई अन्य अधिकारी भी होते थे ।

APCO
Date :
Page :

III नगर प्रशासन ⇒ मौर्य काल में नगरों के प्रशासन का विशेष प्रबन्ध किया गया था। नगर का प्रबन्ध नगर-अध्यक्ष करता था। उसके मुख्य कार्य नगर में शान्ति-व्यवस्था बनाए रखना तथा शिक्षा का प्रबन्ध करना था। नगर-अध्यक्ष की सहायता के लिए 'स्थानिक' तथा 'गोप' नामक दो कर्मचारी होते थे। कौटिल्य के अनुसार 'स्थानिक' नगर के एक-चौथाई भाग की देख-रेख करता था। जबकि गोप के अधीन केवल १० घर ही होते थे।

शिल्प कला समिति ⇒ यह समिति नगर के विभिन्न उद्योगों तथा शिल्पकलाओं की देख-रेख करती थी।

विदेशी यात्री समिति ⇒ यह समिति विदेशियों के हितों और उनकी गतिविधियों पर नजर रखती थी। यह उनके आवास, भोजन तथा चिकित्सा का भी प्रबंध करती थी। विदेशियों के जीवन तथा सम्पत्ति की रक्षा करना भी इस समिति का कार्य था। यदि किसी विदेशी की मृत्यु हो जाती, तो यह समिति उसकी अन्त्येष्टि करती थी और उसकी सम्पत्ति उनके उत्तराधिकारी को सौंप देती थी।

IV ग्राम का प्रशासन → प्रत्येक ग्राम का शासन ग्राम पंचायत करती थी। पंचायत का मुखिया ही ग्राम का मुखिया होता था। वह ग्रामिणी कहलाता था। ग्राम के प्रबंध में वह पंचायत के सदस्यों की सहायता लेता था। उनका चुनाव ग्राम के ही लोग करते थे। उनका पद अवैतनिक होता था। केन्द्रीय सरकार पंचायत के कार्यों में किसी प्रकार का कोई हस्तक्षेप नहीं करती थी, परंतु चंद्रगुप्त मौर्य ने ग्राम के शासन-प्रबन्ध का आयोजन इस प्रकार से किया था कि सभी अधिकारियों पर उसका नियन्त्रण बना रहे। यदि ग्रामिक पर गोप का नियंत्रण था, तो गोप पर स्थानिक का। इसी प्रकार स्थानिक के कार्य की देखभाल गवर्नर करता था तो गवर्नर के काम की देखभाल स्वयं राजा तथा उसकी परिषद् करती थी।

V न्याय-व्यवस्था ⇒ मौर्यकालीन न्याय व्यवस्था में न्याय का मुख्य स्रोत स्वयं राजा था। वह जनता को निष्पक्ष न्याय प्रदान करने का प्रयत्न करता था। उसने सारे राज्य में न्यायालय भी स्थापित किए हुए थे। कौटिल्य के अनुसार एक गांव के न्यायालयों से लेकर आठ सौ गांव तक

के न्यायालय थे। दो ग्रामों के न्यायालयों को जनपद सन्धि, 10 ग्रामों के न्यायालय को संग्रहण, 400 ग्रामों के न्यायालय को द्रोणमुख तथा 800 ग्रामों के न्यायालय को स्थानीय कहा जाता था। प्रत्येक न्यायालय में तीन 'अमात्य तथा तीन 'धर्मस्थ' नामक अधिकारी होते थे। आजकल की भांति उस समय भी दीवानी तथा फौजदारी दो प्रकार के न्यायालय होते थे।

दीवानी न्यायालय को धर्मस्थीय तथा फौजदारी न्यायालय को कंटकशोधन कहा जाता था। उच्चीनस्थ न्यायालयों के निर्णयों के विरुद्ध अपील भी की जा सकती थी। अपील सम्राट के न्यायालय में पेश की जाती थी। ग्रामीणों के झगड़ों प्रायः पंचायतें ही निपटा देती हैं। निर्णय गवाही के आधार पर किए जाते थे। मैगस्थनीज तथा कौटिल्य के अनुसार चंद्रगुप्त मौर्य के समय दण्ड - विधान काफी कठोर थे। छोटे - 2 अपराधों के लिए एक पण हजार तक जुर्माना कर दिया जाता था। चोरी, डाके शिल्पकार को अंगहीन करने तथा किसी की हत्या के अपराध में मृत्यु दण्ड दिया जाता था।

VI वित्त तथा भूमि कर ⇒

कौटिल्य का विश्वास था कि सभी कार्य वित्त पर निर्भर हैं। चंद्रगुप्त ने अपने योग्य मंत्री की बात पर आचरण करते हुए उच्चकोटि का आर्थिक प्रबंध किया। वह सभी प्रकार के कर एकत्रित करता था।

(i) भूमि कर ⇒ भूमि कर मौर्य राज्य की आय का प्रमुख साधन था। अर्थशास्त्र के अनुसार सरकार उपज का 1/4 अथवा 1/6 भाग भूमि कर के रूप में लेती थी।

(ii) आय के अन्य साधन ⇒ भूमि कर के अतिरिक्त राज्य की आय के अन्य साधन थे। 1. सब्जियों - फलों आदि पर कर लगाया गया (2.) वनों पर लगाया गया कर (3) चुंगी कर (4.) नमक बनाने वालों पर (5.) जुर्मानों से प्राप्त आय।

(iii) व्यय ⇒ मौर्य काल में धन व्यय किया जाता था (i) कुछ धन - दरबार की शोभा (2.) सैनिकों के वेतन। (3.) राजकीय कारखानों में काम करने वाले शिल्पकारों को वेतन।
(4.) निर्धनों की सहायता तथा जन - हित कार्यों पर काफी धन खर्च किया जाता था।

APCO
Date :
Page :

VII (गुप्तचर व्यवस्था) ☆

मौर्य का गुप्तचर प्रबंध श्रेष्ठ था। उन्होंने शासन को सुदृढ़ बनाने के लिए गुप्तचर विभाग की व्यवस्था की हुई थी। कुछ गुप्तचर स्थाई रूप से विभिन्न स्थानों पर नियुक्त किए गए थे, जिन्हें संस्था कहा जाता था। इसके विपरीत कुछ गुप्तचर वेष बदल कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे। ये संचार कहलाते थे। स्त्रियां भी गुप्तचर के रूप में कार्य करती थी। गुप्तचर अपराधियों, शत्रुओं तथा देश-द्रोहियों का पता लगाते थे। वे सरकारी कर्मचारियों की गतिविधियों की सूचना भी सम्राट तक पहुंचाते थे। उन दिनों छापेखाने का अभाव होने के कारण गुप्तचर ही राजा को भावनाओं से अवगत कराते थे। राजा तक समाचार पहुंचाने के लिए सिखाए हुए सन्देशवाहक कबूतरों की सहायता ली जाती थी। गुप्तचरों पर भी निगरानी रखी जाती थी। अपने कर्तव्य का पूरा पालन न करने वाले गुप्तचरों को कठोर दण्ड दिया जाता था। वास्तव में मौर्य शासन की सफलता में गुप्तचर विभाग का बहुत बड़ा हाथ था।

ARCO
Date: 31
Page:

Ques:- अशोक के 'धर्म' या 'धम्म' से आपका क्या अभिप्राय है? इसकी विशेषताओं व उसकी नीति पर इसके प्रभावों की व्याख्या कीजिए।

(अथवा)

अशोक के धम्म पर एक निबंध लिखो।

Ans:- भूमिका

अशोक का नाम सम्पूर्ण विश्व इतिहास में उसके द्वारा चलाए गए 'धम्म' अथवा 'धर्म' के कारण प्रसिद्ध है। प्रारंभ में अशोक शिव का उपासक था। परंतु कलिंग युद्ध के पश्चात् उसने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया।

क्या अशोक के अभिलेखों में प्रयुक्त 'धम्म' शब्द का सम्बोधन बौद्ध धर्म की तरफ है? इस विषय को लेकर विद्वानों में कुछ मतभेद है, फिर भी अधिकांश इतिहासकार इस बात पर एकमत हैं कि अशोक का धम्म अथवा 'धर्म' सभी धर्मों का सार था।

1 धम्म की स्थापना के कारण

अशोक के धर्म की स्थापना के लिए उत्तरदायी कारणों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित अनुसार है —

1. वंश का प्रभाव ⇒ आरंभ से ही मौर्य शासक उदार धार्मिक विचारों वाले थे। उन्होंने अपने धर्म के रीति-रिवाजों का पूर्ण निष्ठा से पालन किया तथा अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई।

2. सामाजिक एकता के लिए ⇒ मौर्यकाल में हिंदू धर्म में आई कुरीतियों के कारण बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म का तीव्रता से प्रसार हो रहा था। ऐसी स्थिति में सामाजिक वातावरण अशान्त था। नए तथा पुराने धर्मों के टकराव की सम्भावना से बचने के लिए अशोक ने धम्म को प्रचलित किया।

3. राजनीतिक एकता के लिए ☆ अशोक ने राजनीतिक कारणों से भी धम्म को प्रचलित किया। उसके समय तक मौर्य साम्राज्य काफी विशाल हो चुका था। इस विशाल साम्राज्य में विभिन्न जातियों को एक सूत्र में बांध कर रखना एक कठिन कार्य था। अशोक ने धम्म को प्रचलित करना ही उचित समझा।

II अशोक के धम्म के मुख्य सिद्धान्त ☆

'धम्म' प्राकृत भाषा का शब्द है, जिसे संस्कृत भाषा में धर्म पुकारते है । इसके मुख्य सिद्धान्त निम्नलिखित है —

1. **अहिंसा** ⇒ अहिंसा अशोक के धर्म का मूल मन्त्र है । किसी मनुष्य को मन, वचन तथा कर्म से किसी जीव को कष्ट नहीं देना चाहिए । उसने पशुओं के वध पर रोक लगा दी ।

2. **बड़ों का सम्मान** ⇒ अशोक ने धर्म का मुख्य पहला सिद्धान्त अपने बड़े - बूढ़ों का आदर करना था । बच्चों को माता और पिता की आज्ञा का पालन अवश्य करना चाहिए ।

3. **छोटों के प्रति उचित व्यवहार** ⇒ अशोक के धर्म का दूसरा मुख्य सिद्धान्त यह था कि बड़ों को छोटों के साथ और स्वामी को सेवकों के साथ दया तथा प्रेम का व्यवहार करना चाहिए । उसने दासों तथा नौकरों के प्रति विशेष रूप से अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया ।

4. सत्य भाषण — अशोक का कथन है कि मनुष्य को सत्यभाषी होना चाहिए। बहुला भक्ति से सत्य भाषण कहीं अच्छा है।

5. दान ⇒ अशोक के धर्म में दान के सिद्धान्त का बड़ा महत्व है। अशोक का विचार था कि दान धर्म का सर्वोत्तम रूप है। यह धर्म-दान है और यह दान सोने-चांदी के दान से कहीं अच्छा है।

6. पाप रहित जीवन – मनुष्य को पाप के मार्ग से दूर रहना चाहिए। ईर्ष्या, अत्याचार, क्रोध, अहंकार तथा झूठ आदि बुराइयों के कारण मनुष्य को पाप करने लगता है। पाप-रहित जीवन व्यतीत करने के लिए मनुष्य को इन बुराइयों से बचना चाहिए।

7. धार्मिक सहनशीलता – धार्मिक सहनशीलता भी अशोक के धर्म का मूलमन्त्र थी। इसके अनुसार मनुष्य को सभी धर्मों का आदर करना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक धर्म में कोई-न-कोई अच्छाई अवश्य है। मनुष्य को चाहिए कि वह इस अच्छाई को अपनाने का प्रयास करे।

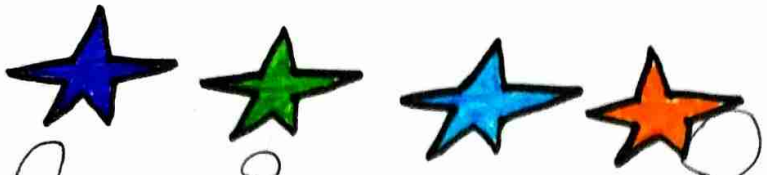

Ques:→ सिकन्दर के भारत पर आक्रमणों का वर्णन कीजिए। इसके क्या परिणाम निकले?

(Describe the Alexander's invasions on India. What were its effects.?)

Ans:→ भूमिका→ ईरानियों के आक्रमण के पश्चात् भारत पर यूनानी शासक सिकन्दर ने आक्रमण कर दिया। उसका आक्रमण भारत के इतिहास की एक युग-प्रवर्तक घटना थी।

मकदूनिया यूनान के उत्तर-पूर्व में स्थित एक साधारण छोटा-सा राज्य था। यह राज्य आर्थिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था। चौथी शताब्दी ई० पू० चाहता में फिलिप द्वितीय मकदूनिया की गद्दी पर बैठा उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र 336 ई० पू० समय में मकदूनिया का शासक बना उसने अरस्तु से राजनीतिक शिक्षा प्राप्त की थी। उसके जीवन पर हरक्यूलिस तथा साइरस जैसे विजेताओं का स्थायी बहुत प्रभाव था। वह उत्तराधिकार में मिले अपने ही छोटे-से राज्य से सन्तुष्ट नहीं था और चूंकि विश्व विजय करना चाहता था सबसे पहले उसने सीरिया, बेबीलोन और मिस्र पर अधिकार किया। 332 ई० पू० में सिकन्दर ने विशाल सेना सहित ईरान पर आक्रमण कर दिया। उस समय ईरान पर डेरियस तृतीय शासन करता था 331 ई० पू० में सिकन्दर ने डेरियस को पुनः खदेड़ दिया और ईरान पर अधिकार कर लिया। इन राज्यों में अस्पेसियन, गुरअन्स, नहीसा, अस्सकीनोस, अष्टक, तक्षशिला, अभिसार, पौरस, ग्लौगनिकाई,

चान्दरीस, मगध, कुदक इत्यादि, राज्य सम्मिलित थे।

सिकन्दर के भारत पर आक्रमण (Alexzander's Invasion on Indan)

सिकन्दर 326 ई०पू० एक विशाल सेना सहित भारत की ओर बढ़ा और बसन्त ऋतु में भारत की उत्तर पश्चिमी सीमा पर पहुँच गया। ऐसा माना जाता है कि इसी समय तक्षशिला के राजा आम्भी के एक दूत ने सिकन्दर से भेंट की और उसे भारत पर आक्रमण करने का निमन्त्रण दिया। इसके पश्चात् सिकन्दर ने भारतीय प्रदेशों पर आक्रमण शुरू कर दिए उसके मुख्य आक्रमण इस प्रकार थे।

(1) **शशी गुप्त की अधीनता :→** सिकन्दर सेना सहित हिन्दुकुश पर्वत की ओर बढ़ा इससे पूर्व उसने अपनी सेना को दो भागों में विभाजित किया। सेना के एक भाग का नेतृत्व हेफाइस्तियन तथा पर्डिक्कस को सौंप दिया, जबकि दूसरी सेना का नेतृत्व स्वयं सिकन्दर ने किया। सिकन्दर की सेना जल्द ही निसा पहुँच गई। यहाँ के शासक शशिगुप्त ने बिना लड़े ही सिकन्दर की अधीनता स्वीकार कर ली। इससे सिकन्दर का हौसला और अधिक बढ़ गया।

(2) **पुष्कलावती पर आक्रमण :→** शशी गुप्त की अधीनता के पश्चात् सिकन्दर ने पेशावर के निकट स्थित पुष्कलावती पर आक्रमण कर दिया। यहाँ अष्टक जाति का शासक अस्तीस शासन करता था। अस्तीस ने सिकन्दर की सेनाओं से युद्ध करने का निर्णय लिया। वैसे भी उसके पास एक शक्तिशाली दुर्ग था। सिकन्दर को इस दुर्ग पर शासन करने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ा। अष्टक राजा इस युद्ध में लड़ता हुआ मारा गया। और पुष्कलावती पर सिकन्दर का अधिकार हो गया। सिकन्दर ने इस प्रदेश की व्यवस्था की जिम्मेदारी तक्षशिला पर सौंप दी। वास्तव में पुष्कलावती अभियान के दो सेनापतियों ने किया था

(3) **अस्पेशियन, गौरियन तथा अस्सकेनिया जातियों के विरुद्ध अभियान :→** सेना के दूसरे भाग का नेतृत्व स्वयं सिकन्दर कर रहा था। उसने कुनार और स्वात नदी घाटी के पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करने वाली अनेक जातियों को पराजित किया। जिसमें अस्पेशियन, गौरियन तथा अस्सकेनिया सम्मिलित थी। सर्वप्रथम, सिकन्दर ने कुनार की घाटी में निवास करने वाली अस्पेशियन जाति से युद्ध किया। इस जाति ने यूनानी सेनाओं का प्रबल विरोध किया। सिकन्दर ने अस्पेशियन जाति को हराकर लगभग 40,000 लोगों को बन्दी बना लिया। इसके पश्चात् वह निसा की ओर बढ़ा। निसा जाति ने बिना लड़े ही सिकन्दर की अधीनता स्वीकार कर ली।

निसा को अधीन करके के पश्चात् सिकन्दर ने गौरियों के प्रदेशों को जीतते हुए अश्वकों के राज्य में प्रवेश किया। इस राज्य की राजधानी मसगा थी कि सिकन्दर ने एक बड़ी संख्या में स्त्रियों को मौत

MBD WRITEWELL
Date .....
Page .....

उतार दिया गया।

(4) तक्षशिला पर अधिकार :→ सीमावर्ती क्षेत्रों को जीतने के पश्चात सिकन्दर की सेना ने सिन्धु नदी को पार किया। उसके आने की सूचना सुनते ही तक्षशिला के शासक आम्भी, जिसका राज्य सिन्धु तथा झेलम नदी के बीच फैला हुआ था ने अपनी समस्त प्रजा एवं सेना के साथ आत्मसमर्पण कर दिया। इसी समय तक्षशिला के पास स्थित छोटे-छोटे शासकों ने सिकन्दर की अधीनता स्वीकार कर ली। और उसे बहुमूल्य उपहार भी प्रदान किए उसने इन राज्यों के प्रबन्ध की जिम्मेदारी इनके राजाओं को ही सौंप दी।

(5) पोरस से युद्ध :→ तक्षशिला की अधीनता के पश्चात सिकन्दर ने झेलम तथा चिनाब के बीच स्थित राज्य के शासक पोरस सन्देश भेजा कि वह सिकन्दर से भेंट करके उसकी अधीनता स्वीकार ले। सिकन्दर पोरस के जवाब से क्रोधित हो गया। वह एक विशाल सेना लेकर झेलम नदी के तट पर पहुँच गया। इसी समय झेलम नदी में बाढ़ आ गई जिसके कारण वह उसे पार नहीं कर सका परन्तु एरियन नामक यूनानी इतिहासकार का मत है कि सिकन्दर विलम्ब करके पोरस की सैनिक तैयार करने के लिए समय देना चाहता था। पोरस के पुत्र ने 2000 सैनिकों सहित यूनानियों का सामना किया और युद्ध करता हुआ मारा गया।

इस प्रकार सिकन्दर की सेना झेलम नदी को पार करते हुए करी के मैदान में पहुँच गई पोरस भी 50,000 पैदल, 30,000 घुड़सवार, 130 हाथी सहित युद्ध के मैदान में पहुँच गया परन्तु तेज बारिश के कारण भूमि दल-दल हो जाने से पोरस के हाथी और रथ कारगर साबित नहीं हो सके रथों के पहिए कीचड़ में धंस गए जबकि सिकन्दर की सेना घोड़ो पर थी जिससे इन्होंने पोरस की सेना को जल्दी निशाना बना लिया। पोरस के दो पुत्र हजारों सैनिक युद्ध में मारे गए। सिकन्दर ने पोरस से पूछा आपके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए उसने कहा जैसा कि एक राजा, राजा के साथ करता है इस उत्तर से सिकन्दर प्रभावित हुए और उन्होंने उसे उसका राज्य व अनेक जीते क्षेत्र भी लौटा दिए।

6. कठ व अन्य कबीलों के विरुद्ध अभियान :→ सिकन्दर ने चिनाब नदी के पश्चिम में स्थित ग्लौचुकायन राज्य पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार कर पोरस के राज्य में मिला दिया इसके बाद वह छोटे पुरु राज्य की ओर बढ़ा वह सिकन्दर से बिना लड़े ही राज्य छोड़कर भाग गया सिकन्दर ने उसके राज्य पर अधिकार कर लिया और पोरस को दे दिया। इसके अतिरिक्त, सिकन्दर ने रावी नदी को पार किया और कठ जाति को पराजित कर दिया। इस युद्ध में 17 हजार कठ मारे गए और 70 हजार बंदी बना लिए गए।

MBD WRITEWELL
Date .... Page ....

सिकन्दर की वापसी — 324 ई० पू० में सिकन्दर व्यास नदी के तट पर पहुँचा। सिकन्दर ने मुरकरिया नदी के तट पर सेना स्थापित कर दी और आगे आक्रमण करने की योजना बनाने लगा परन्तु उसके सैनिकों ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। परिणाम स्वरूप उसने सेना को वापिस यूनान लौटने का आदेश दे दिया।
सिकन्दर जिस मार्ग से आया था उसी मार्ग को न वापिस लौट गया बाद में उसका मुकाबला युद्धप्रिय जातियों से हुआ। ऐसा माना जाता है कि इस युद्ध में सिकन्दर भी घायल हो गया वह स्वयं स्थल मार्ग से बलोचिस्तान और ईरान होता हुआ बेबीलोन पहुँचा 323 ई० में वह भयंकर रूप से बीमार हो गया। कुछ ही दिनों उसकी मृत्यु हो गई।

सिकन्दर के आक्रमण के प्रभाव — सिकन्दर के आक्रमण से भारत के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन पर गहरे प्रभाव पड़े जिसका वर्णन इस प्रकार है।

(1) **राजनीतिक एकता** — सिकन्दर ने अपने राज्यों में कई छोटे-छोटे राज्यों को पराजित किया। इसका लाभ चन्द्रगुप्त मौर्य को मिला। जिसने पंजाब, मगध, सहित अनेक राज्यों को जीतकर भारत में राजनीतिक एकता स्थापित कर दी।

MBD WRITEWELL
Date .... Page ....

(2) **इतिहास लेखन की परंपरा का आरंभ** — सिकन्दर अनेक इतिहासकारों को भारत लाया जिसमें एरियन और प्लूटार्क जैसे विद्वान शामिल थे। उन्होंने अपने ग्रंथों में तत्कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, तथा संस्कृति स्थिति पर प्रकाश डाला। इससे इतिहास लेखन में भी भारी मात्रा में सामग्री उपलब्ध हो गई। और भारत के विदेशों से सम्बन्धन इत्यादि के विषय में जानकारी प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं।

(3) **विदेशों से संबंध** — सिकन्दर के आक्रमण से नए मार्गों का पता चलता है सिकन्दर की सेना जल और थल मार्गों से वापिस गई। कालान्तर में इन्हीं मार्गों के विषय में इन्हीं मार्गों पड़ोसी राज्यों एवं दूरदराज के देशों के साथ राजनीतिक एवं व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हो गये।

(4) **जन-धन की हानि** — सिकन्दर के आक्रमण से भारत को विशाल जन और धन की हानि उठानी पड़ी। सिकन्दर भारत में 19 वर्ष तक रहा। इस अवधि के दौरान उसने न केवल भारत से सोना चाँदी लूटकर ले गए। जिन भारतीय शासकों ने सिकन्दर की अधीनता स्वीकार की उन्होंने भी यूनानी शासकों को उपहार इत्यादि धन में धन पानी की तरह बहाया। इसके अतिरिक्त, सिकन्दर के आक्रमण में हजारों लोग भी मृत्यु के शिकार हो गए।

5. व्यापार में वृद्धि — सिकन्दर के आक्रमण के परिणामस्वरूप नये जल और स्थल मार्ग का पता चला। इसी के साथ इन मार्गों के कारण, बेबीलोन, तुर्की, कुस्तुनतुनिया सहित यूरोप के अनेक देशों से व्यापार होने लगा। अब व्यापारी भारत से वस्त्र, हाथी दाँत का सामान, अनाज, गर्म मसाले इत्यादि विदेशों को ले जाते थे और इसके बदले सोना-चाँदी भारत में आता था।

6. कला का प्रभाव — सिकन्दर के आक्रमण से भारत की कला पर भी बहुत प्रभाव पड़ा इस आक्रमण से भारतीय और यूनानी संस्कृतियों का समन्वय हुआ जिससे एक नई कला शैली का उदय हुआ जिसे गान्धार कला शैली कहा जाता है इस शैली के आधार पर कलाकारों ने अनेक मूर्तियाँ बनाई जिसमें सजीवता देखने को मिलती है। इसी कला के नमूने हमें तत्कालीन भवनों तथा सिक्कों पर भी देखने को मिलती है। भारतीयों ने सिक्कों को गोल आकार का बनाना तथा उन पर तरह-तरह की आकृतियाँ बनाना यूनानियों से ही सीखा था।

निष्कर्ष — उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत की राजनीतिक अवस्था का लाभ उठाकर सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण कर दिया। उसने भारत के अनेक राजाओं व कबीलों को पराजित किया उसके आक्रमणों के परिणामस्वरूप, भारतीय कला, विज्ञान, तथा व्यापार का बहुत विकास हुआ। अब भारतीय शासकों ने युद्ध के मैदान में यूनानियों की तरह घोड़ों और हथियारों का प्रयोग आरम्भ कर दिया था।

Ques:→ ② गुप्तकाल को प्राचीन भारत का "स्वर्णयुग" क्यों कहा जाता है?

(अथवा)

गुप्तकाल को प्राचीन भारतीय इतिहास का "स्वर्णयुग" कहना कहाँ तक उचित है?

परिचय →

Ans:→ स्वर्णयुग की धारणा का इतिहास में सामान्य तौर से प्रयोग किसी युग में हुए विकास को वर्णित करने के लिए किया जाता है। गुप्त सम्राटों ने विस्तृत, शक्तिशाली और संगठित साम्राज्य कायम तो किया ही और साथ ही एक उत्तम शासन प्रबन्ध भी स्थापित किया गया जिसके परिणाम स्वरूप देश में शान्ति का वातावरण बना। कृषि, उद्योग तथा वाणिज्य की अच्छी स्थिति के कारण लोगों का जीवन सुखी, सम्पन्न तथा समृद्धशाली था। इतिहासकारों ने गुप्तकाल को प्राचीन भारतीय इतिहास का "स्वर्ण युग" कहा है अथवा विकास का वर्णन इस प्रकार है।

① राजनीतिक एकता — मौर्य काल के बाद भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। इस काल में शक, हूण, कुषाण आदि विदेशी जातियों ने भारत के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया जिससे भारत में राजनैतिक एकता का अभाव हो गया परन्तु चौथी शताब्दी में गुप्त शासकों ने सभी छोटे-2 राज्यों को शक्तिशाली तथा संगठित साम्राज्य स्थापित कर दिया समुद्रगुप्त ने उत्तर के राजाओं को हराया इस प्रकार देश में भाईचारे और राष्ट्रीय की भावना का विकास हुआ।

② प्रजाहितैषी राज्य — गुप्त सम्राट महान शासक प्रबन्धक थे उन्होंने समय राज्य में एक तन्त्रीय

प्रणाली प्रचलित थी और शासन की सारी शक्तियाँ राजा में निहित थीं परन्तु वह उनका प्रयोग नहीं करता था उन्होंने प्रजा का कल्याण, हिन्दू धर्म में प्रचलित अन्धविश्वासों को दूर किया।

3. **संस्कृत भाषा का विकास** — गुप्त काल में संस्कृत भाषा का बड़ा विकास हुआ इस भाषा में साहित्य की रचना की गई गुप्त सम्राट संस्कृत शिक्षा के संरक्षक थे। उन्होंने इसे राष्ट्र भाषा घोषित किया उन्होंने शिलालेखों व सिक्कों पर भी इसका प्रयोग किया उस समय न केवल विद्यालयों बल्कि विहारों में भी संस्कृत भाषा में शिक्षा दी जाती है।

4. **धार्मिक सहनशीलता** — गुप्त शासक बहुत महान थे यद्यपि वे स्वयं हिन्दू धर्म के अनुयायी थे फिर भी उन्होंने धार्मिक सहनशीलता की नीति अपनाई। इसके अलावा गुप्त शासकों ने बिना किसी भेदभाव से नौकरियाँ दीं समुद्रगुप्त ने दरबार में असंग व वसुबन्धु जैसे विद्वानों को राजाश्रय दिया। धार्मिक सहनशीलता की इस नीति ने राजनीतिक दशा को प्रभावित किया जिससे लोग प्रेम भाव से रहने लगे।

5. **कला तथा स्थापत्य कला का विकास** — गुप्त काल में कला व स्थापत्य में भी बड़ी उन्नति हुई अजन्ता की गुफाओं में की गई चित्रकारी ने गुप्त काल को अमरता प्रदान की। महात्मा बुद्ध विष्णु शिव की मूर्तियों को देखकर उन्नति का शिखर आसानी से लगाया जा सकता है। यह गुप्त काल की कला गान्धार तथा कुषाण से उन्नत थी इस काल में सिक्के व धातु कला भी विकसित थी।

6. **शिक्षा तथा साहित्य** — गुप्त काल में शिक्षा व साहित्य के काल में भी उन्नति हुई इस काल में जहाँ संस्कृत भाषा ने उन्नति के शिखर को छुआ। वहीं इस समय अनेक कवि, विद्वान, साहित्यकार व यह नाटककार हुए जिन्होंने अहम बलिदान दिया कालीदास इस युग का महान रत्न था उसने अभिज्ञान शकुन्तलम्, मेघदूत रघुवंश, ऋतुसंहार नामक प्रसिद्ध नाटककार थे जिसे तमिल साहित्य कहते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी इस काल का विकास सन्तोषजनक था।
विद्यार्थी आश्रमों में शिक्षा ग्रहण करते थे उस समय में वेद, तर्क, दर्शन, साहित्य, विज्ञान, ज्योतिष तथा गणित की शिक्षा पर जोर दिया जाता था।

7. **आदर्श सामाजिक जीवन** — गुप्तकाल के लोग सादा व पवित्र जीवन व्यतीत करते थे उनका नैतिक स्तर व सामाजिक दृष्टिकोण ऊँचा था अधिक लोग शाकाहारी थे वे शराब का सेवन नहीं करते थे वे मांस, प्याज लहसुन नहीं खाते थे। गुप्त शासकों ने यात्रियों की सुरक्षा के लिए विश्राम गृह बनवाये थे।

8. **हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान** — गुप्त काल में हिन्दू धर्म ने सभी गुप्त काल अपने खोए हुए गौरव को प्राप्त किया हिन्दू धर्म के अनुयायी थे उन्होंने सिक्कों पर भी अनेक देवी-देवताओं को स्थान दिया उन्होंने संस्कृत भाषा को राज भाषा का दर्जा दिया जिसके कारण इस काल में हिन्दू धर्म का विकास हुआ।

10. **विज्ञापन एवं तकनीकी का विकास** — गुप्त काल में विज्ञापन एवं तकनीकी का विकास में भी उन्नति कि इस काल में गणित, ज्योतिष, वनस्पति विज्ञान, रसायन व धातु विज्ञान के क्षेत्र में भी उन्नति की। आर्यभट्ट उस समय का बहुत ही गणितज्ञ व ज्योतिष था उसने अंकगणित बीजगणित में नई खोज की उसने उसने दशमलव की खोज की उसने सूर्य व चन्द्रमा का कारण भी बताया था।

11. **भारतीय संस्कृति का प्रसार** — गुप्त काल को स्वर्णयुग इसलिए भी कहा जाता है क्योंकि भारतीय प्रचारकों व व्यापारियों ने जावा, सुमात्रा, बाली, बोर्नियो आदि विभिन्न देशों में भारतीय संस्कृति को फैलाया इन्होंने विदेशों के लोगों को भारतीय संस्कृति के रंग में रंगा। आज भी वहां के लोग भारतीय त्योहारों तथा उत्सवों को बड़ी धूम-धाम से मनाते हैं। हम भारतीयों के लिए यह बहुत गर्व की बात है।

उपसंहार — उपरोक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि गुप्त काल के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में असाधारण उन्नति हुई गुप्त काल ने कला एवं स्थापत्य कला, साहित्य एवं शिक्षा, विज्ञान, एवं तकनीकी, आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अद्भुत उपलब्धियाँ प्राप्त की इसलिए इसे प्राचीन भारत का स्वर्ण कहा जाना उचित है यह सदियों से अर्जित ज्ञान एवं अनुभव का परिणाम था।

धम्म प्रचार के पग

III

अशोक अपने धम्म का प्रसार साम्राज्य के प्रत्येक कोने तक करना चाहता था। इस उद्देश्य के लिए उसने कई कार्य किए। डॉ० आर० के० मुखर्जी के अनुसार

"अशोक की मौलिकता इस बात में इतनी नहीं है कि उसने इस धर्म के विषय में सोचा, अपितु इस बात में है कि उसने इसे लोगों तक पहुंचाने के लिए क्रियात्मक पग उठाए।"

अशोक ने अपने धम्म के प्रचार के लिए निम्नलिखित पग उठाए -

(1) उसने अपने धम्म के प्रचार के लिए सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप दिया और लोगों के सामने व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत किया। उसने शिकार खेलना तथा मांस खाना छोड़ दिया और धार्मिक सहनशीलता की नीति को अपनाया। सम्राट के इन आदर्शों से लोग बहुत प्रभावित हुए।

(2) उसने अपने धम्म के मुख्य सिद्धान्तों को शिलाओं तथा स्तम्भों पर खुदवाया ताकि जनता इन्हें पढ़कर अपने व्यावहारिक जीवन में अपना सके। अशिक्षित जनता की सुरक्षा के लिए वर्ष में कई बार इन नियमों को ऊंचा - ऊंचा पढ़कर सुनाया जाता था।

APCO
Date :
Page :

(IV) साम्राज्य नीति पर प्रभाव

अशोक के धम्म के उसकी साम्राज्य नीति पर निम्नलिखित प्रभाव पड़े –

(1.) धर्म विजय – अशोक ने दिग्विजय के स्थान पर धर्म विजय को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया।

2. प्रजाहितार्थ कार्य ⇒ अशोक की साम्राज्य नीति पर उसके धम्म का एक मुख्य प्रभाव यह था कि सभी राज्याधिकारी प्रजा के साथ नम्रता तथा दयालुता का व्यवहार करने लगे।

3. सदाचारी जीवन ⇒ अशोक का धर्म नैतिक सिद्धान्तों का संग्रह था। परिणामस्वरूप सभी लोग सदाचारी का जीवन व्यतीत करने लगे।

4. अपराधों का अन्त ⇒ अशोक के धर्म के कारण राज्य में अपराधों का अन्त हो गया। लोग सुखी एवं समृद्ध थे। उन्हें किसी प्रकार की कमी अनुभव नहीं होती थी फलस्वरूप उनके मन में अपराध करने का विचार भी नहीं आता था।

APCO Date: 37

Ques:-) महमूद गजनवी ने भारतीय आक्रमणों का संक्षिप्त वर्णन करें। उनके परिणामों की व्याख्या करें।

(अथवा)

गजनवी के भारत पर प्रमुख आक्रमणों का वर्णन कीजिए।

Ans:-) भूमिका :- महमूद गजनवी गजनी का एक महान शासक था। उसने 998 ई० से 1030 ई० तक शासन किया। उसने 1000 ई० से लेकर 1027 ई० के मध्य भारत पर 17 बार आक्रमण किए। इन सभी आक्रमणों में महमूद गजनवी को सफलता प्राप्त हुई। इन आक्रमणों से जहाँ एक ओर महमूद गजनवी की प्रतिष्ठा बढ़ी वहीं दूसरी ओर वह भारत के लिए विनाशकारी प्रमाणित हुए। इन आक्रमणों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित अनुसार है—

I महमूद गजनवी के आक्रमण :-

1. (प्रथम आक्रमण) 1000 ई० महमूद गजनवी ने सितंबर 1000 ई० में भारत पर अपना प्रथम आक्रमण किया। यह आक्रमण केवल पंजाब के उत्तरी पश्चिमी सीमा तक ही सीमित था। महमूद गजनवी का ये प्रथम आक्रमण था।

2. (दूसरा आक्रमण 1001 ई०) महमूद गजनवी ने 1001 ई० में पंजाब के हिन्दूशाही शासक जयपाल पर आक्रमण किया। इसका कारण था कि जयपाल महमूद गजनवी को किसी भी समय चुनौती पेश कर सकता था।

3. (तीसरा आक्रमण 1004 ई०) महमूद गजनवी ने 1004 ई० में अपना तीसरा आक्रमण भेरा के शासक बीजीराय पर किया। उसने महमूद गजनवी की सेना का डटकर सामना किया।

4. (चौथा आक्रमण 1006 ई०) महमूद गजनवी ने अपना चौथा आक्रमण मुल्तान पर किया। उस समय वहाँ अबुल फतेह दाऊद का शासन था।

5. (पाँचवा आक्रमण 1007 ई०) महमूद गजनवी के गजनी लौटने के शीघ्र पश्चात् सुखपाल ने अपने स्वतंत्र होने की घोषणा कर दी। महमूद ने सुखपाल को सबक सिखाने के उद्देश्य से 1007 ई० में मुल्तान पर पुनः आक्रमण कर दिया।

6\. (छठा आक्रमण 1008 ई०) पंजाब का हिन्दूशाही शासक आनन्दपाल महमूद गजनवी के भारत में तीव्रता से बढ़ते हुए कदमों को रोकना चाहता था। परिणामस्वरूप ग्वालियर, कन्नौज, उज्जैन, कालिंजर, दिल्ली तथा अजमेर के शासकों ने आनन्दपाल को अपना पूर्ण सहयोग दिया।

7\. (सातवां आक्रमण 1009 ई०) 1009 ई० में महमूद ने नगरकोट पर आक्रमण कर दिया। नगरकोट के लोगों ने महमूद गजनवी की आसानी से अधीनता स्वीकार कर ली।

8\. (आठवां आक्रमण 1009 ई०) 1009 ई० में ही महमूद गजनवी ने नारायणपुर के शासक को पराजित किया।

9\. (नौवां आक्रमण 1010 ई०) मुलतान में अब्दुल फतह दाऊद ने पुनः महमूद गजनवी के विरुद्ध गतिविधियां शुरू कर दी थीं। अतः महमूद ने 1010 ई० में मुलतान पर आक्रमण पर करके उसे बन्दी बना लिया। यह महमूद का नौवां आक्रमण था।

10 (दसवां आक्रमण 1013 ई०) महमूद गजनवी ने 1013 ई० में आनेश्वर पर आक्रमण किया। आनेश्वर हिंदुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल था। यहां अनेक मन्दिर थे, जहां से महमूद को अपार धन प्राप्त हो सकता था।

11 (ग्यारवां आक्रमण 1014 ई०) महमूद गजनवी से पराजित होने के पश्चात् आनन्दपाल ने नन्दना को अपनी राजधानी बनाया था।

12 (बारहवां आक्रमण 1015 ई०) महमूद गजनवी ने त्रिलोचनपाल को पकड़ने के उद्देश्य से कश्मीर पर आक्रमण किया।

13 (तेरहवां आक्रमण 1018 ई०) महमूद गजनवी ने 1018 ई० में अपने तेरहवें आक्रमण के दौरान मथुरा पर आक्रमण किया। यहां उसने अनेक मंदिरों को नष्ट कर दिया। इसके पश्चात् उसके सैनिक कन्नौज पहुंचे। इन दिनों कन्नौज उत्तरी भारत का सर्वाधिक प्रसिद्ध राज्य था।

Date: 66
Page:

II गजनवी के आक्रमणों के प्रभाव ☆

महमूद गजनवी के भारतीय आक्रमणों के भारतीय समाज पर दूरगामी प्रभाव पड़े।

1. भारत की राजनीतिक दुर्बलता का प्रदर्शन
☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

महमूद गजनवी के आक्रमण से भारत की राजनीतिक दुर्बलता का भांडा फूट गया। उसने भारत की राजनीतिक फूट का लाभ उठाते हुए निरंतर सत्रह आक्रमण किए और हर बार विजयी रहा। उसे एक बार भी पराजय का मुंह न देखना पड़ा।

2. भारत में इस्लाम धर्म का प्रसार => महमूद गजनवी के आक्रमणों के कारण भारत में इस्लाम धर्म का प्रसार आरंभ हुए। उसके अत्याचारों को देखकर तो शायद ही कोई व्यक्ति उस धर्म में सम्मिलत होता।

3. मुस्लिम राज्य की स्थापना में सुगमता ☆ महमूद गजनवी के आक्रमणों से भारत विजय के द्वार खुल गए। वह अन्य विदेशी आक्रमणकारियों का प्रेरणा स्त्रोत बना। यदि महमूद गजनवी भारत न आया होता. तो शायद मुहम्मद

गौरी भारत की ओर मुँह न करता।

4. जन-धन की हानि ⇒ महमूद गजनवी के आक्रमणों के कारण भारत को जन-धन की भारी क्षति उठानी पड़ी। उसके आक्रमणों का मुख्य उद्देश्य लूटमार करना था। वह प्रत्येक बार अपना धन गजनी ले गया। नगरकोट से लगभग 7 लाख स्वर्ण दीनार, 2 मन शुद्ध सोना, 2 हजार मन चांदी तथा 20 मन हीरे-जवाहरात उसके हाथ लगे। इसी प्रकार सोमनाथ की लूट से 20 लाख दीनार के मूल्य का माल उसके हाथ लगा।

5. पंजाब ⇒ गजनी साम्राज्य का अंग ⇒ महमूद गजनवी ने पंजाब को गजनी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया। भारत के आंतरिक भागों में लूटमार करने के लिए उसे पंजाब पर अधिकार करना आवश्यक था। महमूद की मृत्यु के पश्चात भी उसके उत्तराधिकारियों ने पंजाब को डेढ़ सौ वर्षों तक अपने अधीन रखा। इस विषय में डॉ० आर० सी० लिखते हैं कि गजनवी द्वारा पंजाब पर अधिकार करना था।

* (मुस्लिम संस्कृति का प्रसार)

महमूद गजनवी के आक्रमणों के कारण अनेक भारतीय मुसलमान बन गए थे। इसके अतिरिक्त महमूद गजनवी के साथ आए तुर्क मुसलमान यहां बस गए। इस प्रकार दो विभिन्न संस्कृतियों का संगम हुआ। भारतीयों के खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाजों में नए तत्वों का समावेश हुआ। पंजाब में मुस्लिम शैली के अनुसार अनेक मस्जिदें बनाई गई। कालान्तर में इस मुस्लिम शैली का हिंदुओं तथा हिंदु शैली का मुसलमानों ने अनुसरण किया।

8. भारतीयों में हीनता की भावना

महमूद के आक्रमणों के पूर्व भारतीयों को अपने योद्धाओं पर गर्व था। परंतु निरंतर पराजयों ने उनके सम्मान को ठेस पहुंचाई। उन्हें अपनी वीरता पर सन्देह होने लगा। उन्होंने यह धारणा बना ली कि विदेशी आक्रमणकारी भारतीयों से अधिक सशक्त हैं। वे यह भी नहीं सोच सके कि उनकी पराजय का कारण दुर्बलता नहीं अपितु संगठन का अभाव था। भारतीयों में हीनता की भावना पैदा हो गई।

9. कृषि तथा कुटीर उद्योगों पर प्रभाव ✗

महमूद गजनवी के निरंतर आक्रमणों का भारतीय कृषि तथा उद्योग पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा। लोग सदा अपनी सुरक्षा की चिन्ता में रहते थे। अतः वे न तो कृषि और न ही उद्योगों के विकास के लिए कोई कार्य कर सके। भारतीय कृषि तथा उद्योग अस्त-व्यस्त हो गए। सोने की चिड़िया कहलाने वाला देश अब कंगाली के कगार पर जा पहुंचा।

10. भारतीय युद्ध शैली में सुधार ✗ महमूद गजनवी की विजयों ने भारतीयों को अपनी युद्ध-विधि बदलने के लिए बाध्य कर दिया। महमूद गजनवी सदा भोजना के आक्रमण करता था। उसे अपने युद्ध कौशल का पूरा ज्ञान होता था। उसके लड़ने का ढंग भारतीयों से कहीं श्रेष्ठ था। अतः भारतीयों के लिए मुस्लिम युद्ध-शैली सीखना अनिवार्य सा हो गया। यही कारण था कि बाद में मुहम्मद गौरी को दो एक बार पराजय का मुंह देखना पड़ा था। उसे तराइन के पहले युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के हाथों करारी हार मिली थी।